श्री स्वामिनारायण

मासिक

मूल्य रु। ५-००

सलंग अंक ८३ मार्च-२०१४

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख

श्री नरनारायणदेव का १९२ वां पाटोत्सव

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

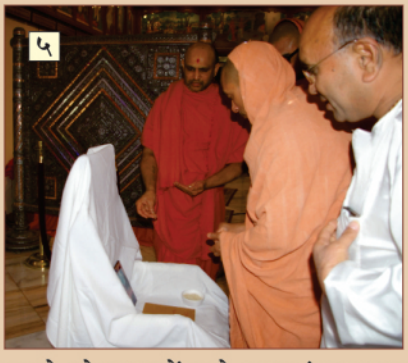

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव के १९२ वें पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट दर्शन ।(२) एडिलड (ओस्ट्रेलीया) में नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर अन्नकूट दर्शन ।(३) डेट्रोइट मंदिर में शाकोत्सव दर्शन ।(४) एटलान्टा मंदिर में शाकोत्सव दर्शन ।(५) शिकागो मंदिर में शिक्षापत्री जयंती प्रसंग पर शिक्षापत्री का पूजन करते संत हरिभक्त ।(६) लेस्टर मंदिर में शिक्षापत्री जयंती की सभा में वचनामृतपान करते हुए हरिभक्त ।

जेतलपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर का नया नंबर : ९०९९९३९३७६

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ७ ● अंक : ८३

मार्च-२०१४

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	स्वामिनारायम की जयजयकार	०६
०४.	शिक्षापत्री की अवमानना के विषय में धर्मवंशी का उपदेश	०८
०५.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का आस्ट्रेलिया धर्मप्रवास	१०
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	११
०७.	सत्संग बालवाटिका	१३
०८.	भक्ति सुधा	१६
०९.	सत्संग समाचार	२०

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● वंशपारंपरिक देश में ५०१-०० ● विदेश १०,०००-०० ● प्रति कोपी ५-००

॥ अस्मदीयम् ॥

सर्वावतारी श्रीहरि अपने आश्रितों को अक्षरधाम में लेजाना है, इसलिये अक्षरधाम में जाने की पात्रता के लिये भगवान श्रीहरि ने शुद्ध स्वस्वरुप का ज्ञान प्राप्त कराकर सत्पात्र बनाने के आशय से तथा अत्यन्त आवश्यक ऐसी भगवान श्री नरनारायणदेव को उपासना भक्ति तथा पूजा द्वारा प्राप्त करने के लिये सुलभ मार्ग श्री स्वामिनारायण संप्रदाय के आश्रितों को प्रशस्त किया है। वे अपने वचनामृतों में वारंवार उसका पुनरावर्तन करके उस जीव के हृदय में उपासना दृढ हो इसका विशेष ध्यान रखा है। उस वचनामृत में से अर्थात् २७२ वचनामृतों को अवश्य वांचना चाहिये तथा समझना चाहिये, इससे मुमुक्षु का हित होना संभव है। ग.प्र. ८, ४८, ७३, ७४, सारंगपुर - ८, ग.म. २१, २२, अमदावाद ४, ६, ८, जेतलपुर ३, ४, ५ ये तरह वचनामृत जीवन में जो उतार लेगा उसे यत्र-तत्र भटकने की जरुरत नहीं पडेगी।

प्रिय सुज्ञ भक्तों ! हमे ऐसे प्रत्यक्ष देव मिले हैं इसलिये हमारे भाग्य की कोई सीमा नहीं है। देश-विदेश के हरिभक्तों को नम्र अनुरोधहैं कि परमकृपालु परमात्मा श्री नरनारायणदेव के पाटोत्सव का अवश्य दर्शन करें।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(फरवरी-२०१४)

१ श्री स्वामिनारायण मंदिर लीलापुर (ता. हलवद मूली देश) मूर्ति प्रतिष्ठा के प्रसंग पर पदार्पण।

२ श्री स्वामिनारायण मंदिर माणेकपुर (चौधरी) कथा प्रसंग पर पदार्पण।

३ इसंड गाँव में श्री रोकडिया हनुमानजी की प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण। सायंकाल मूली पदार्पण।

४ श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली वसंत पंचमी को श्री राधाकृष्ण देव के पाटोत्सव तथा रंगोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

५ श्री स्वामिनारायण मंदिर उवारसद पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

६ श्री स्वामिनारायण मंदिर मुवासा (पंचमहाल) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरडा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

८ श्री स्वामिनारायण मंदिर भीमपुरा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

९ श्री स्वामिनारायण मंदिर विश्रांतिभवन मुंबई (विलेपार्ले) कथा प्रसंग पर पदार्पण।

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर मोखासण पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१० से १९ फरवरी श्री स्वामिनारायण मंदिर एडिलेड (ओस्ट्रेलीया) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण, वहाँ से सीडनी पदार्पण।

२० श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट ठाकुरजी के पाटोत्सव अभिषेक अपने वरद हाथों से किये।

२१ श्री स्वामिनारायण मंदिर विहार पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर भक्तिनगर (मूली देश) कथा प्रसंग पर पदार्पण।

२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर जानगवड (पंचमहाल) कथा प्रसंग पर पदार्पण।

२४ श्री स्वामिनारायण मंदिर भाउपुरा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२५-२६ हैद्राबाद (आंध्रप्रदेश) तथा प्रसंग पर पदार्पण।

२६ से २८ छपैयाधाम तथा अयोध्या दर्शनार्थ।

प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(फरवरी-२०१४)

१६ श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा पाटोत्सव प्रसंग पर आयोजित कथा में पधारे।

स्वामिनारायम की जयजयकार

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुर धाम)

भगवान स्वामिनारायण महाप्रभु के स्वधाम गमन के बाद सन १९०७ के अरसे में शारदापीठ शंकराचार्य माधवतीर्थ प्रेरित स्वामिनारायण संप्रदाय की व्यवस्था वेद विरुद्ध होने का दुष्टप्रचार किया जा रहा था । उसी अवसर पर काशी के तथा अन्यत्र के धर्माचार्य, विद्वान, महामंडलेश्वर इत्यादि को इस कार्यक्रम में सामिल किया गया था । थोड़े समय में स्वामिनारायण संप्रदाय की प्रतिष्ठा अन्य संप्रदायो की अपेक्षा अग्रसर हो रही थी । इसी अवसर पर वांमपंथी अर्थात् विरोधियों द्वारा संप्रदाय के विरुद्ध अप्रचार किया जा रहा था । इसकी ध्वनि काशी तक पहुंची । काशी के विद्वानों को संप्रदाय वेद विरुद्ध है ऐसा कहने के लिये दबाव किया जा रहा था । बाद में संप्रदाय के आश्रित प्रतिनिधितथा अहमदावाद - वडताल देश के विद्वान पांच संतो को आचार्य महाराजश्री ने अपने हस्त लिखित पत्र को लेकर काशी भेंजा । जिस में वडताल के पूज्य शास्त्री बलरामदासजी स्वामी मुख्य थे ।

श्री स्वामिनारायण संप्रदाय की व्यवस्था के विषय में शास्त्रार्थ के अवसर पर ता. ६-११-१९०७ को श्री भारत धर्म महामंडल प्रधान कार्यालय काशी में पंडित महाराज नारायण शिवपुरी के प्रधानाध्यक्ष पद पर प्रतिष्ठित विद्वान महोमहोपाध्याय पं. सुधाकर द्विवेदीने सभा में प्रस्ताव प्रस्तुत करके दरभंगा के मही महेन्द्र व्याकरणाचार्य श्री जयदेव शर्माने अनुमोदन किया था । जिस में छसौ (६००) से भी अधिक भारतभर के विद्वान को निमंत्रित किया गया था । उन सभी की उपस्थिति में ११ दिन तक शिक्षापत्री, वचनामृत देश विभाग का लेख तथा सत्संगीजीवन पर २५० जितने प्रश्न पूछे गये थे । संप्रदराय व्यस्था के विषय पर प्रमाणपुरस्सर संतो के साथ ५ लक्ष्मीदास पंडित नागरदास इत्यादि विद्वानों ने महाराज की कृपा से उत्तर दिया था । उन प्रश्नों में से २२९ वें प्रश्न में भगवान के धाम के विषय में क्या मानते हैं ? उसके जवाब में श्रीमद् भगवद् गीता के १५ वें अध्याय का प्रमाण देकर वचनामृत अमदावाद सातवें में श्रीहरिने कहा कि, अनंत ब्रह्मांड के असंख्य शिव, असंख्य ब्रह्मा, असंख्य कैलास, असंख्य वैकुंठ, तथा गोलोक ब्रह्मपुर तथा असंख्य करोड अन्य भूमि कार्य हमारे तेज से तेजोमय हो रही है । गीता के सप्रमाण उत्तर को सुनकर उपस्थित प्रतिपक्षी विद्वान पुनः प्रश्न करने की साहस नहीं किये । २५० प्रश्नोत्तर को सूरत के एक विद्वान के पास से लेकर एनजीन प्रेस की तरफ से प्रकाशित किया गया था । उस समय संप्रदाय की विजय हुई थी तथा संप्रदाय की संम्पूर्ण व्यवस्था वेद विरुद्ध नहीं है ऐसा प्रमाणित किया गया था । जो अधोनिर्दिष्टहै

ठहराव-१ : श्री सहजानंद स्वामी निर्मित शिक्षापत्री के उपदेश कल्याणकारी तथा वैदिक है । जिस के अनुसार प्रवर्तित संप्रदाय वेदोक्त माना जाता है । ब्राह्मणादिक वर्णों द्वारा उसे स्वीकार करने में कोई दोष नहीं है । कार्तिक शुक्ल-प्रतिपदा संवत १९६४ बुधवार लेखक - सुधाकर द्विवेदी (महामहोपाध्याय)

ठहराव-२ : श्री सहजानंद स्वामी द्वारा लिखित शिक्षापत्री वैदिक धर्म का अवलम्बन करती है । उस में उपदिष्ट धर्म वैदिक है । उसके आश्रय में कोई आपत्ति नहीं है । (लेखक - कैलाशचंन्द्र शिरोमणी (महामहोपाध्याय) इसके अलावां २२ विद्वान हस्ताक्षर किये हैं ।

ठहराव-३ : श्री सहजानंद स्वामी द्वारा लिखित शिक्षापत्री में जो भी उपदेश है वे श्रुति-स्मृति के अनुसार वैदिक हैं, उसका अनुशरण करने वाला स्वामिनारायण

संप्रदाय का आश्रित वैदिक है । (कार्तिक शुक्ल एकादशी १९६४ - लेखक - पं. संगमलाल झा (महामहोपाध्याय) इसके अलांवा १४१ पंडितो के हस्ताक्षर है।

ठहराव-४ : श्री सहजानंद स्वामी द्वारा विरचित शिक्षापत्री के उपदेश देवता - पितृयज्ञ के लिये की जाने वाली हिंसा तथा मांस भक्षण का निषेधतथा श्रौत-स्मार्त कर्म वर्ण - आश्रम के अनुसार वेदविहित धर्म है । इसका आश्रय करने में कोई दोष नहीं है । (कार्तिक शुक्ल-१३ सम्वत १९६४ - लेखक - सुब्रह्मण्यम् शास्त्री (महामहोपाध्याय इत्यादि पंडित वर्य)

ठहराव-५ : श्री स्वामिनारायण संप्रदाय के शिक्षापत्री नामक ग्रन्थ में वर्णित उपदेश श्रुति-स्मृति के अनुरुप है । चारो वर्णों द्वारा परिपालन करने योग्य है । इसमें कोई आपत्ति नहीं है । (मार्गशीर्ष शुक्ल-३ शनिवार - संवत १९६४ - लेखक - भवानी शंकर अग्नि होत्री) इत्यादि १८ विद्वानों के हस्ताक्षर।

ठहराव-६ : श्री स्वामिनारायण की शिक्षापत्री का हमने अध्ययन किया, उसका चिन्तन किया, मनन किया बाद में यह विचार आया कि यह संप्रदाय वेद विरुद्ध नहीं है । (कार्तिक कृष्ण-१४ संवत् १९६४ - लेखक - स्वा. अद्वैतानंद इत्यादि ३६ विद्वानों के हस्ताक्षर हैं । इसके अलांवा संवत १९४० में वडोदरा शहर के विद्वानों की एक सभा हुई जिस में संप्रदाय का प्रतिपादन करने वाले ठहराव को विद्वानों ने किया था ।

काशी की विषद् परिषद में अहमदावाद के सात वें वचनामृत के वचन से विजय की घोषणा की गयी थी । इसलिये जिस वचनामृत में अहमदाबाद का सातवां वचनामृत छपा हो वही वचनामृत घर में रखना चाहिये । संवत् १९६४ में वचनामृत के भीतर अहमदाबाद का सातवां वाचनामृत था, जो काशी के विद्वद् परिषद में प्रस्तुत किया गया था । भारत के अन्य किसी संप्रदाय द्वारा आपत्ति नहीं की गयी थी । श्रीजी महाराज की कृपा से सदा स्वामिनारायण की जयजयकार हो ।

श्री स्वामिनारायण पत्रिका प्रकाशन की मालिकी के सन्दर्भ में ।

१.	प्रकाशन स्थल	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदावाद-१
२.	प्रकाशन समय	:	प्रति मास
३.	मुद्रक का नाम	:	महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१
४.	संपादक का नाम	:	महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१
५.	मालिक	:	श्री नरनारायणदेव की गादी के अधिपति प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१

मै शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी यह स्पष्ट कर रहा हूं कि ऊपर दी गई बातें मेरी जानकारी और समझ के अनुसार सत्य हैं ।

हस्ताक्षर : शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी, महंत स्वामी
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर,
अहमदावाद-१, (प्रकाशक की साईन)

शिक्षापत्री की अवमानना के विषय में धर्मवंशी का उपदेश

- प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल

भगवान श्री स्वामिनारायणने अक्षरधाम से इस पृथ्वी पर आकर जीवों का कल्याण करने के लिये मंदिरों की मूर्तियों में, शास्त्र तथा धर्म वंशी आचार्य के रुप में विचरण करने का वरदान दिये हैं ।अपनी उपस्थिति में इन तीनों की रचना करके संप्रदाय को नियमों से सुदृढ कर दिया है । सर्व प्रथम सं. १८७८ फाल्गुन शुक्ल-३ को अमदावाद में मंदिर की रचना करके उसमें श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित किया । इतना ही नहीं उस स्वरुप में सदा निवास करुंगा ऐसा भक्तों को वचन दिया । बाद में सं. १८८२ माप शुक्ल पंचमी को स्वयं शिक्षापत्री की संस्कृत श्लोको में लिखकर स्पष्ट कहे कि यह शिक्षापत्री जो परावाणी है वह मेरा ही रुप है । (श्लो. २०९) मोक्ष में साधनरुप आचार्य महाराज की स्थापना धर्मवंश में से करने की आज्ञा की । ऐसी ही स्वयं अपनी उपस्थिति में अमदावाद श्री नरनारायणदेव देश तथा वडताल - श्री लक्ष्मीनारायण देव देश इस तरह दो पीठस्थानों को प्रतिष्ठित करके सभी सत्संगियों के गुरुपुद के रुप में प्रतिस्थापित किये । सभी के लिये आज्ञा किये कि त्यागी - गृही सभी इनकी ही आज्ञा में रहेंगे । इनकी पूजा-प्रतिष्ठा मेरी आज्ञा के अनुसार करना है, तभी मोक्ष के अधिकारी बनेंगे । इस विषय के देश विभाग का लेख सं. १८८३ मार्गशीर्ष शुक्ल-१५ को गढडा में लिखवाये । श्रीहरिने स्वयं स्पष्ट कहा है कि यह शिक्षापत्री सत्संगियों के लिये आधार शिला है । इस लोक तथा परलोक में सुखी रहने की आज्ञा का उल्लंघन करने वाले बड़े कष्ट को पायेंगे । ऐसी सभी आश्रितों को आज्ञा किये । शिक्षापत्री में बताई गयी कोई भी आज्ञा मात्र मोक्ष के लिये ही नहीं है अपितु इसलोक में सुख:शान्ति को देने वाली है।

शि.पत्री श्लोक २०८ में श्रीहरिने लिखा है कि इस शिक्षापत्री का नित्य पाठ करना, पढने न आवे तो उसका श्रवण करना । इसके श्रवण मात्र से पवित्र होने की आज्ञा है । क्योंकि यह शिक्षापत्री स्वयं अक्षराधिपति भगवान स्वामिनारायण ने १ से २१२ श्लोको को लिखी है । प्राय: सभी संतो को २१२ श्लोक कंठ होते हैं । जिन्होंने श्रीहरि की इसवाणी को आत्मसात् किया है वे धन्य है । श्रीहरिने श्लोक २०९ में लिखा है कि यह जो मेरी वाणी है वह मेरा स्वरुप है । जितनी महिमा श्री नरनारायणदेव की है । उतनी ही शिक्षापत्री की है ।

हरिभक्तों को यह अवश्य समझना चाहिये कि जो भी सत्शास्त्र प्रकाशित हों वे आचार्य महाराजश्री की आज्ञा वाले हो तो ही वे सद्शास्त्र कहे जायेंगे । बाजार में चाहे जैसी भी शिक्षापत्री छपकर विकती हो वह मात्र पुस्तक है । अपने दैनिक पूजा में महाराजश्री की आज्ञावाली शिक्षापत्री को सभी भक्तों को रखनी चाहिये । शि.पत्री श्लोक १३२ में श्रीहरिने धर्मवंशी आचायश्री को सद्विद्या प्रवर्तन करने की आज्ञा की । इसके लिये यह भी आज्ञा किये कि जो भी ग्रंथ प्रकाशित हो उसमें क्षेपक तो नहीं आ रहा है, इसका ध्यान देकर प्रकाशित करने की आज्ञा प्राप्त पुस्तक ही सद्शास्त्र कहा जायेगा । आज के युग में कितने भक्त अपने मन माने ढंगसे शिक्षापत्री को प्रकाशित करके किसी कार्यक्रम में सभी को भेंट देते हैं । इस विषय में चिन्तनीय है शि.प. श्लो. २१०, जिस में महाराजकी आज्ञा है कि शिक्षापत्री मात्र दैवी जीवो को देनी चाहिये, आसुरी जीवों को नहीं देनी चाहिये । संप्रदाय के शास्त्रो में दैवी तथा आसुरी जीव किसे कहा जाय इसकी स्पष्टता शिक्षापत्री में ही महाराजने की है । यह वात तो स्पष्ट है कि इस महाराज के स्वरुप को जैसे-तैसे व्यक्ति को तो नहीं देना चाहिये । कुपात्रो के हाथ में यह शिक्षापत्री जाय तो श्रीहरि की कृपा से वंचित अवश्य होजायेंगे । श्रीमद् भगवद् गीता के अध्याय १८ श्लो. ६७ में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि इस गीता के रहस्य को तप रहित, भक्ति रहित व्यक्ति को न सुनाना चाहिये न कहना चाहिये । इसी तरह यह परावाणी जिस किसी को नहीं अपितु सुपात्र को अवश्य देनी चाहिये । कितने लोग अपने संबन्धी के फोटो को आगे-पीछे छपवाकर लिखते हैं कि श्री.... के स्मरणार्थे । सुज्ञजन को विचार करने लायक है कि हमें स्मरण तो श्रीहरि का करना

है न कि अन्य का । शिक्षापत्री में भगवान स्वामिनारायण सिवाय किसी अन्य का नहीं रखना चाहिये, वह इसलिये कि यह शिक्षापत्री हम सभी अपने दैनिक पूजा में रखते हैं, उसकी नित्य पूजा करते है, श्रीजी सिवाय अन्य किसी जीव का पूजन करना दोषावह होगा, इससे अपना मोक्षमार्ग बिगड जायेगा । २०५ श्लोक के अनुसार जीवन में वर्तन करने से कल्याण होगा । किसी को शिक्षापत्री की आज्ञाओं का उपदेश करने मात्र से कल्याण नहीं होता । इसका आचरण करने से कल्याण होता है । कितने अज्ञानी लोग शिक्षापत्री को भेंट देनें या बेचने में अपना कल्याण मानते हैं । श्री शिक्षापत्री छपाते समय ध्यान रखना चाहिये - शिक्षापत्री में श्रीहरि का चित्र, धर्मवंशी आचार्यश्री की आज्ञा अवश्य होनी चाहिये । संभव हो तो मूल संस्कृत छपाकर नीचे गुजराती, हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी इत्यादि भाषाओं में अनुवाद छपाना चाहिये । कारण यह कि श्रीहरि की मूल वाणी तो संस्कृत ही है । यह हमें न आती हो तो उसकी पूजा-अर्चना करनी चाहिये । छपी हुई उस शिक्षापत्री में बिन जरुरी नाम का उल्लेखनहीं करना चाहिये । इस जीव का स्वभाव है कि ..... मैं छपाया हूँ, मैं लाया हूँ, मै भेंट दिया हूँ । मेरी प्रेरणा से... इत्यादि का उल्लेख करते हैं । सुज्ञजनों को विचार करना चाहिये कि जिस शिक्षापत्री में महाराज ने अपनी वाणी को अपना स्वरुप कहा ही, उसके ऊपर अपना शब्द लिखना क्या संगत है । अंग्रेजी में उक्ती है **I is always capital** इस अहम्मत्व का भाव छोडकर आज्ञा के अनुसार वर्तन करने में ही श्रीजीकी प्रसन्नता है ।

शिक्षापत्री महाग्रंथ का मूल्य हमें समझना चाहिये । कितने हरिभक्त घर में शिक्षापत्री तो रखते अवश्य हैं लेकिन उसमें लकीर खींचते हैं, रिमार्क करते हैं, उसके ऊपर कोई वस्तु रखते हैं । यह सब अयोग्य है । यदि हम शिक्षापत्री को श्रीहरि का स्वरुप मानते है तो यह सब नहीं करना चाहिये । जमीन पर शिक्षापत्री नहीं रखनी चाहिए । अपवित्र हाथ से स्पर्श नहींक रना चाहिये । प्रतिदिन प्रात: उठकर पूजन करना चाहिए । पन्न को मोडना नहीं चाहिये । शांत चितसे पठन करना चाहिए । सावधान मुद्रा में बैठकर उच्चारण करते हुए वांचन करना चाहिए । सोते हुए नहीं वाचना चाहिए । एकवार पाठकरने के बाद उसी का चिन्तन भी करना चाहिए । सदा यह ध्यान रखना चाहिए की कहीं आज्ञा का उल्लंखन तो नहीं हो रहा है । परमात्मा के सामने दीन भाव होकर वांचन करना चाहिए ।

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव देश के पूर्व पीठाधिपति, धर्मकुल मुकुट मणि, विश्ववंदनीय, तपोमूर्ति ऐसे प.पू. बड़े महाराजश्री श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री अर्थात् करुणा के सागर संप्रदाय का तथा सभी सत्संगियों के हितकरने वाले, मितभाषी, महापुरुष ने ता. ४-२-१४ को वसंत पंचमी के दिन शिक्षापत्री की बड़ी श्रद्धा के साथ आरती उतारे थे । श्रीजी के अपर स्वरुप धर्म वंशी आचार्यने श्रीजी के ही एक स्वरुप की आरती उतारे, श्रीजी का ही तीसरा स्वरुप मंदिर में विराजमान मूर्ति की जब आरती उतारे उस समय जीवन की अमूल्य घड़ी धन्य हो गयी । अनेक हरिभक्त श्रीहरि के अपर तीनो स्वरुपों का दर्शन करके धन्यता का अनुभव कर रहे थे । प्रसंग की पूर्णाहुति के बाद जब महाराजश्री कुछ समय के लिये ध्यान मग्न हो गये, उसके बाद ध्यान से बाहर आने पर सिद्धावस्था की सभी यथार्थता को व्यक्त किये । हमें भावात्मक विचारों को बताते हुये कहे कि हितेन्द्रभाई यह सभी वात आप लेख के रुप में लिखकर सभी हरिभक्तों के ध्यान में लाइये । अमदावाद देश के अग्रगण्य संतवर्य श्री ब्रह्मानंद स्वामी को सत्संग की मर्यादा का कभी लोप नहो ऐसा भाव था । जब कि प.पू. महारजाश्री तो अदमदावाद देश के पूर्व पीठाधिपति हैं । वे सभी हरिभक्तों के कल्याणार्थ उनके दु:खो को दूर करने के लिये सदा चिन्तन करते रहते हैं । हरिभक्त अनजान में भी सत्संग की रीति-नीति से अनजान न हों, किसी प्रकार के दोष से ग्रसित न हों, इस लिये यहाँ पर यह उपदेश दिया गया है । अंत में स.गु. निष्कुलानंद स्वामी की पंक्ति का उल्लेख करते हुए कहे कि -

''सो वात की एक वात छे, नव करवो आज्ञानो लोप ।
राजी करवानुं रह्युं परुं, पण न करावी ए हरिने कोप ॥''

सभी सत्संगी प.पू. बड़े महाराजश्री की यह आज्ञा हृदय में धारण करके उन्हीं की आज्ञा में वर्तन करके श्रीजी को तथा धर्मवंशी आचार्य की प्रसन्नता, कृपा प्राप्त करना ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का आस्ट्रेलिया धर्मप्रवास

- साधु रामकृष्णदास (कोटेश्वर)

भगवान श्री स्वामिनारायण का सर्वजीव हितावह संदेश सर्व व्यापी इसके लिये पू. महाराजश्री तथा संत अविरत विचरण करते रहे हैं। अमेरिका, आफ्रिका, युरोप, आस्ट्रेलिया में भी श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा उन्हीं की छत्रछाया में अविरत सत्संग का विकास हो रहा है। सीडनी, मेलबोर्न, पर्थ में महामंदिरों के निर्माण बाद आस्ट्रेलिया के एडीलेड नगर में पू. महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा भुज मंदिर के पू. महन्त स्वामी की प्रेरणा से तथा सभी संत हरिभक्तों के सहकार से एक ही वर्ष में नूतन भव्य मंदिर का निर्माण हो गया। जिस का प्रतिष्ठा महोत्सव १३-२-१४ से १७-२-१४ तक मनाया गया था। सीडनी, मेलबोर्न, पर्थ, ब्रिसबेन, न्युजीलेन्ड, यु.के. होंगकोंग, अफ्रिका से अनेक भक्त इस महोत्सव में आये हुए थे। सर्व प्रथम सभी संतो ने एडीलेड में रहने वाले स्वल्प संप्रदाय के सत्सगियों द्वारा इतना सुन्दर मंदिर का निर्माण कार्य हुआ है इस लिये अभिनंदन के साथ आशीर्वाद दिया था। पू. महाराजश्रीने अपने हाथों श्री घनश्याम महाराज इत्यादि देवों की प्रतिष्ठा करके मकान को मोक्षदाता मंदिर के रुप में परिवर्तित कर दिया था। इस मूर्ति में प्रत्यक्ष भाव रखकर भक्ति तथा सत्संग आप सभी करते रहना। अक्षरधाम के अधिपति आप सभी की मनोकामना पूर्ण करेंगे। इस तरह का आशीर्वाद पू. महाराजश्रीने दिया था।

सभी को आनंदित करके पू.महाराजश्री ता. १७-२-१४ को सीडनी पधारे थे। सीडनी में अपने दोनों मंदिर में प.पू. महाराजश्री ने आरती, सभा तथा आशीर्वचन का लाभ दिया था। आस्ट्रेलिया खंडका सर्व प्रथम मंदिर श्री स्वामिनारायण मंदिर (आई.एस.एस.ओ.) में सत्संग की वृद्धि को देखकर विशाल बनाया गया है। जिस में श्री हनुमानजी, श्री गणपतिजी, तथा पंच देवो का पुनः स्थापन-पूजन प.पू. महाराजश्री ने किया था। तथा सभा में यह सत्संग तथा मंदिर का विकास देखकर तथा खूब प्रसन्न होकर सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। इसके साथ ही अप्रैल २०१५ में सम्पन्न होने वाले भव्य दशाब्दिक महोत्सव की घोषणा के बाद भी आशीर्वाद दिये थे।

इस प्रवास में शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारणघाट), शा.स्वा. श्री रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) तथा वनराज भगत प.पू. महाराजश्री की सेवा में उपस्थित थे।

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in
भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५
● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

मार्ग में चलते हुये शिवालयादि मंदिर आवें तो वहाँ रुककर आदर पूर्वक देव का दर्शन करके आगे जाना चाहिये ॥२३॥ महाशिव रात्रि का व्रत करके उस दिन विशेष प्रकार का पूजन एवं उत्सव करना चाहिये ॥७९॥ इस तरह श्रीजी महाराज ने शिक्षापत्री में शिवजी की पूजा का प्रतिपादन किया है। इसके अलांवा श्रीजी महाराज भी अपने विचरण काल में गुजरात के जिस-जिस भाग में जाते वहाँ के मार्ग में जो भी शिवालय आते उनमे आदरपूर्वक शिवलिंग का पूजन-अभिषेक करते। डभाण में श्रीजी महाराज ने रुद्रयाग किया था। डभाण के सिद्धेश्वर महादेव के शिवलिंग की श्रीजी महाराजने पूजन-अर्चन किया था तथा वहीं पर के रीके रस से श्रीजी महाराज ने स्वयं अभिषेक भी किया था। उस समय वहाँ के सभी ब्राह्मणों को तथा संतो को शंख भरभरकर प्रसाद वितरण किया था। वही शिवलिंग श्री स्वामिनारायण म्युजियम के ५ नं. होल में दर्शनार्थ रखा गया है।

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें।
मोबाईल में टाईप करें : cf 270930 टाईप करें 56789
नम्बर पर : S.M.S. करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा। नोंट : cf टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि फरवरी-२०१४

रु.५१,०००/- मावजी हरजी राधवाणी ध.प. जसुबहन मावजी रादवाणी नाईरोबी बड़दिया (कच्छ)

रु.१५,०००/- कमलभाई चंदुलाल शाह ध.प. स्मिता कमलभाई शाह नाईरोबी

रु.१४,०००/- पटेल रमणलाल केशवलाल, राजपुरवाला (ए.एस.ए.) साबरमती

रु.११,०००/- धीरजभाई के. पटेल सोला

रु.५,००१/- अ.नि. नवनीतलाल वाडीलाल पटेल कृते डॉ. हिरेनप्रसाद पोथीवाला तीसरा वार्षिक पाटोत्सव।

रु.५,०००/- प.भ. रमेशभाई प्रहलादभाई पटेल (दूधवाला) अमदावाद

रु.५,०००/- प्रफुलभाई त्रिवेदी - अहमदाबाद

रु.५,०००/- नरेन्द्रभाई बी. पटेल परिवार, अ.नि. नटवरलाल परिवार विशाल एन्ड पटेल परिवार - पालडी

सूचना : श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (फरवरी-२०१४)

ता. २-२-१४ अ.नि. जगदीशचंद्र मणीकलाल सोनी - खाडीया कृते हेतलभाई तथा दर्शितभाई

ता. ५-२-१४ (प्रातः) धनजीलालजी हरजी राबडीया - केरा (कच्छ) कृते - नैरोबी

ता. ५-२-१४ (दोपहर डॉ. अनंतभाई चीमनभाई पटेल - ऊँझा

ता. ९-२-१४ अ.नि. मोहनलाल रेवाशंकर त्रिवेदी परिवार - प्रांतिज

ता. ११-२-१४ आश्विनकुमार (वजुभाई) डाह्याभाई अमीन - वेजलपुर

ता. १५-२-१४ रमेशभाई रणछोडभाई मारफतिया - सेटेलाईट कृते ज्योत्सनाबहन, प्रग्नेश, ज्ञानेश, निरान्तेज

ता. २६-२-१४ कल्याणभाई प्रेमजीभाई राबडीया - मांडवी (कच्छ)

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए।
म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६
www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

भावपूर्ण भक्ति

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

आज भगवान स्वामिनारायण देवालिया पधारे हैं । वहाँ की केशिनी बा महाराज की परम भक्ता थी । उन्होंने महाराज से कहा कि प्रभु ! आपका क्या कार्यक्रम है ? महाराजने कहा, प्रातः उठकर स्नानादिक दैनिक कृत्य करके निकल पडेंगे ? मछियाव जाना है । बडा उत्सव करना है । महाराज ! मछीयाव उत्सव करें या हमारे यहाँ उत्सव करें इसमें कोई फर्क नहीं है, लेकिन हमारी एक विन्ती है । क्या विन्ती है ? भोजन किये बिना जाना ठीक नहीं ? रात्रि में यहाँ रुके हैं तो प्रातः विना भोजन किये हम विदा नहीं करेंगे । महाराज ने कहा कि भूख तथा भाव ए दोनो समान है लेकिन मछीयाव पहुंचना जरुरी है । चाहे जो भी हो महाराज ! श्रीजी महाराजने कहा कि आपका आग्रह कल के भोजन के लिये है न ? कल देखेंगे ।

महाराज रात्रि में सो गये । केशिनीबा को विचार आया कि हम भगवान के हैं, भगवान हमारे हैं । जो भी किया जाय उसमें कोई तकलीफ नहीं । भगवान माफ करेंगे । लेकिन विना भोजन कराये जाने नहीं दूंगी । भाव गहरा था । एक उपाय उन्होंने सोच लिया । रात्रि के समय केशिनी बा अपने रुम में से बाहर निकली । श्रीजी महाराज की माणकी घोडी जहाँ बांधी थी वहाँ पहुंच गयी । वहाँ जाकर माणकी के ऊपर हाथ फेरकर कहीं कि हे बहन ! तूं मेरी जाति की हो, अर्थात् तूं भी नारी जाति की हो । मैं भी नारी हूं । इसलिये मेरी इज्जत रखना । मुझे श्रीजी महाराज को भोजन कराना है । भगवान प्रातः उठकर भागने वाले है । माणकी को वहां से खोलकर राजमहल के नीचे भुइधरा में बांधदेती है । माणकी को विन्ती इसलिये की कि – बरामदे में बांधी घोडी आवाज करे तो सभी पोल खुल जायेगी । इसलिये घोडी से कहती है कि तूं मेरी मदद करना ।

प्रातः उठकर मानो महाराज कुछ न जानते हों इस तरह स्नानादिक विधिकरके तैयार होकर आज्ञा किये, चलो पार्षद तैयार हो जाओ । इतने में माणकी घोड़ी की रखवाली करने वाला पार्षद आकर कहता है कि, महाराज ! घोडी तो नहीं है । राज महल में से घोडी जायेकी कहाँ ? खोजो ? धुड़ा कर अगल बगल में कहीं चरती होगी । महाराज ! कहीं नहीं है । चौकीदार को बुलाक पूछने लगे, यह क्या भाई ? महाराज ? मैं तो यहाँ पर खटियाडालकर बैठा हूँ । कोई कहीं से नहीं आया है न तो गया है । ऐसाकौन होगा जो राजमहल के दरवाजे पर आया होगा ? पावर में चौकीदार बोल रहा था । श्रीजी महाराजने कहा, कोई आया नहीं, अगल बगल में भी नहीं है, तो मेरी माणकी गयी कहाँ ? चौकीदारने कहा कोई आया नहीं, मैने दरवाजा खोला नहीं । यहाँ राजमहल के चौक में भी नहीं है । तो क्या आकाश मार्ग से देवता चोरी कर लेगये, महारजाने कहा । केशिनी बा कहती हैं, हे महाराज ? हम गल्ती स्वीकार करते हैं । हमारे राजमहल में से माणकी चुराली गयी, यह हमारी क्षति कही जायेगी । हमारी सुरक्षा व्यवस्था ठीक नहीं है । लेकिन महाराज ! हम विश्वास दिलाते है कि माणकी की चोरी करने वाला जहाँ भी होगा, उसे खोज निकालेंगे । चारो तरफ सिपाहियों को भेंजेगे । थोड़ा समय अवश्य लगेगा । प्रभु ! इतने जल्दी तो पकड़ाना बड़ा कठिन है । तब तक आपका भोजन हम बना देगी । और चोर भी पकड़ा जायेगा । इतना विश्वास है कि चोर भी पकड़ा जायेगा और घोड़ी भी मिल जायेगी । हाँ, महाराज तो यह

निश्चित है कि चोर इसी महल में है, बाहर का नहीं है । भगवान भक्त के भाव वश में होकर, थाल का प्रसाद ग्रहण किये । बाद में केशिनी बा ने माफी मांगा - हे महाराज ! क्षमा कीजिये । महाराजने कहा कि आपने माणकी को घास खिलाया, पानी पिलाया, हम सब कुछ जातने हैं। हमें कोई नाराजगी नहीं है । महाराज ! हमारी गल्ती पर आपको क्षमा करना होगा । महाराजने कहा कि, आपका कोई अपराधनहीं है, आपकी भावना देखकर मैं बहुत प्रसन्न हूँ ।

यदि भक्त के हृदय में प्रेम हो, भगवान के प्रतिभक्ति हो तो भगवान से हठ करने पर भी उसे स्वीकार करते हैं । जिस तरह बालक मां-बाप से हठ करता है तो उन्हें अच्छा लगता है । उसी तरह भगवान की स्थिति है ।

कितनी सुंदर वात ! कितना अद्‌भुत भक्त का भाव ? निर्मल भक्त भाव भी निर्मल होता है । ऐसे निर्मल भावमें परमात्मा स्थिर होते है । परमात्मा को इस प्रकार के भाव से परवश होना पडता है । शिक्षापत्री में ऐसा कहा गया है कि भगवान के प्रति निर्मल स्नेह को ही भक्ति कहते हैं । इसी वात को निष्कुलानंद स्वामीने बल दिया है -

''दान पुण्य ने व्रतविधिकरे, भक्तिनवधा कोय ।
स्नेह विना सर्वे सुनुजेम, भोजन घृत विन होय ॥

इसलिये केशिनी बा की तरह भगवान की भक्ति करके भगवान की भजन-भक्ति कर लेनी चाहिये ।

●

विद्या किस तरह मिले

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

पुराने जमाने की वात है । उस जमाने में ऋषि-मुनि जंगल में रहते थे । जंगल में आश्रम बनाकर रहते थे। जयदीप नामका एक युवान था । उसने ऐसा विचार किया कि हमें विद्वान होना है ।

मुझे विद्या में पारंगत होना है । सभी से श्रेष्ठ होना है । लेकिन पुस्तक हाथ में विना लिये । वह जयदीप भी ऋषि पुत्र था । उस जयदीप के आश्रम के नजदीक मुद्‌गल ऋषि का भी आश्रम था । मुद्‌गल ऋषि भी बड़े विद्वान थे । उन्हें एक पुत्र था । उसका नाम जयवर्धन था । वह जयवर्धन अपने पिता से बाल्यावस्था से ही विद्याभ्यास करके बड़ा विद्वान हो गया । जयदीप - जपवर्धन का प्रिय मित्र था । दोनो एक साथ खेलते, जंगल में घूमने जाते, नदी में स्नान करते । लेकिन जयवर्धन के साथ पढता नहीं था । जिससे वह अज्ञानी ही रह गया ।

समय-समय की वात है । समय वीतते विद्वता के कारण जय वर्धन बड़ी-बड़ी सभाओं में जाता । उसके लिये राजा महाराजाओं के आमंत्रण आते । कभी वह पालकी में जाता तो कभी हाथीपर बैठकर जाता । ऐसा उसका भव्य संमान होता रहता । इस तरह के भव्य संमान को देखकर जयदीप को ईर्ष्या होती । वह विचार करता कि मेरे साथ बडा हुआ जयवर्धन साथ खेला खाया, जंगल में घूमा -उसे इतना अधिक संमान मिल रहा है । वह इसलिये कि वह खूब विद्या का अभ्यास किया, विद्वता के कारण आज इसकी इतनी प्रतिष्ठा हो रही है । अब हमें भी विना पढे, बिना गुरु की सेवा किये ही विद्या प्राप्त करनी है । हम मात्र तप के बल से विद्या प्राप्त करेंगे । अति कटोर तप करके विद्या प्राप्त करके विद्वान होगें ।

जयदीप इन्द्र को प्रसन्न करने के लिये अति कठोर तप करने लगता है । प्रारंभ में दिन में एकबार भोजन करते तप करता है । बाद में भोजन वंद करके केवलपानी पीकर तप करता है । ठन्ढी - गरमी - बरसात को सहन करने लगता है । इसके बाद बायु भक्षण करके तप कता है । इन्द्र देव प्रसन्न होकर उसके पास आते हैं । और वर मांगने को कहते हैं । जयदीप ने कहा कि हमें विना पढे विद्या प्राप्त हो ऐसा वरदान दीजिये । इन्द्र ने कहा, वरदान से विद्या नहीं मिलती । गुरु की सेवा से तथा विद्याभ्यास से विद्या मिलती है । इन्द्र इतना कहकर चले गये । जयदीप तो जिद पकडकर बैठा था कि हमें तपसे ही विद्या प्राप्त करनी है । हठाग्रही जयदीप पुनः तप प्रारंभ कर दिया ।

उतने ही उत्साह से तप करने लगा । जितने उत्साह से पहले कर रहा था । लेकिन वह यह समझन हीं पा रहा था कि तप से विद्या प्राप्त नहीं होती । इसके लिये गुरुकी सेवा तथा कठिन विद्याभ्यास की जरुरत पड़ती है । जयदीप प्रतिदिन गंगास्नान करके तप मैं बैठजाता । लेकिन इकदिन एकदृश्य देखा, एक वृद्धब्राह्मण मुट्ठी भर भरकर गंगा में माटी फेंक रहा है । बार-बार यही करता । यह देखकर जयदीप उसके पास जाकर कहने लगा कि एवृद्ध ! आप ऐसा क्यों कर रहे हैं ? वह वृद्ध जदीप की तरफ विना देखे अपना काम चालू रखा । जयदीप पुनः पूछता है, एवृद्ध ? यह क्या कर रहे हो ? फिर भी वह वृद्ध अपने काम में मशगुल था । जयदीप उस वृद्ध के हाथ को पकड़ लिया और पूछा कि आप यह क्या कर रहे है ? उस वृद्ध ने कहा कि मुझे गंगापार करना है, गंगा के प्रवाह को रोक कर रास्ता बनाकर उसपार जाना है । यह सुनकर जयदीप हंसने लगा । अरे वृद्ध ! दिमाग है या नहीं ? इस तरह तो हजारो जन्म बीत जायेंगे तो भी गंगा पर बांधनही बांधसकोगे । यह संभाव ही नहीं है ।

यह सुनकर वह वृद्ध हंसते हुए कहा कि यदि तुम विना पढे - गुरु को सेवा विना किये विद्वान हो सकते हो तो मैं मुट्ठी मुट्ठी मांटी से बांधक्यों नहीं बना सकता ? विद्या की साधना तथा मुट्ठी की मिट्टी दोनो समान है । जयदीप की बुद्धि ठिकाने आगयी । उसे वात समझ में आगयी । इस वात को समझाने के लिये इन्द्र ने वृद्ध का रुप लिया था । अब जाकर विद्याभ्यास करना प्रारंभ कर, विद्वान अवश्य बनेगा । जयदीप घर जाकर अपने पिता से इन्द्र के वरदान की वात की पिता प्रसन्न होकर उसे तपोधन मुनि के पास विद्याभ्यास के लिये ले गये । मुनिने जयदीप के मस्तक पर हाथ रखकर कहा कि विद्याभ्यास के लिये इतना ध्यान अवश्य रखना -

''आलस्यं मद मोहंच चापलं गौष्ठि रेव च ।
स्तब्धता चाभिमानित्वं तथा त्यागित्व मेवच ॥

आलस्य, मद, मोह, चंचलता, वाचालता, साब्धता, अभिमानिता, लोभ इत्यादि का विद्याभ्यास काल में त्याग करना चाहिये ।

''क्षणशः कणशश्चैव विद्यामर्थ च साधयेत ॥''

धनवान् - विद्यावात् होने के लिये एक-एकक्षण तथा कण का उपयोग करना चाहिये ।

सुखार्थिनः कुतोविद्या नास्ति विद्यार्थिनः सुखम् ।
सुखार्थीवा त्यजेत् विद्यां विद्यार्थीवा त्यजेत् सुखम् ॥''

सुखार्थी को विद्या प्राप्त नहीं होती, विद्यार्थी को सुखका परित्यगा करना चाहिये । विद्याध्यय कठोर साधना है । सुखकी अपेक्षा छोडकर विद्याभ्यास में लगजाना चाहिये । जयदीप गुरुदेव के वचन सुनकर रातदिन विद्याभ्यास में मन लगाया और जयदिप महान विद्वान बन गया । आप सभी को एक संदेश है पुस्तक पूजन के लिये नहीं है । बल्कि उसके अभ्यास के लिये है । पुस्तक पूजन से सरस्वती प्रसन्न नहीं होती बल्कि अभ्यास-चिन्तन करने से होती हैं ।

स्वामिनारायण भगवानने वचनामृत में कहा है कि ''जो मनुष्य मेहनत करता है उसी के ऊपर भगवान की कृपा होती है । आलसी मनुष्य के ऊपर भगवान क्या कोई भी प्रसन्न नहीं होता ।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस
shreeswaminarayan9@gmail.com

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से "कल्याण की चाहना हो तो विचारों में दृढता रखनी चाहिए"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

परमात्मा को प्राप्त करना हो तो जीवन में परमात्मा को प्रथम स्थान देना पडेगा । शरीर में आसक्ति नहीं रखनी चाहिये, हम प्राय: भगवान को छोड़कर शरीर में आसक्ति रखते हैं । भगवान ने दया करके मनुष्य शरीर दिया है । इसलिये सत्संग कर लेना चाहिये । सभी गुण सत्संग में से आते हैं । अपनी शरीर में जो प्रकृति के भाग हैं वे, मन, इन्द्रियां, अन्त:करण इत्यादि को हम अपनामान लेते हैं । यद्यपि सत्यकुछ और ही होता है । यह शरीर इस जन्म से पहले नहीं था । मृत्यु के बाद भी यह अपना नहीं रहेगा । क्योंकि अपनी हो तो अपनी ईच्छा के अनुसार चले न ? हम बिमार न पडे ? हम में वृद्धावस्था न आवे, हम जब चाहें तब निद्रा आजाय, मन तथा ईन्द्रियां भी हमारे कहने में चले । परंतु ऐसा नहीं होता । जिस पर अपना वश नहीं होता, वह अपना नहीं होता । इसलिये सत जागृत होकर यह चिन्तन करते रहना चाहिये कि यह शरीर नाशवंत है । हम इस संसार में आये है और चले जायेंगे । परंतु कब जायेंगे यह निश्चित नहीं है । वर्तमान का ठिकाना नहीं, भविष्य में जाने का निश्चय नहीं । सभी के जीवन इसी तरह पूर्ण हो जायेंगे । परंतु अपना वर्तमान अच्छा है । परमात्मा की कृपा से हमें अच्छा सत्संग मिला है । इसलिये विचारो में दृढता रखकर कल्याण के मार्ग पर चलते रहना है । कोई वस्तु इस संसार में स्थाई नहीं है । दो वातें जीवन में याद रखनी चाहिये - (१) इस जगत में मेरा कुछ नहीं है, (२) मुझे कुछ चाहिये भी नहीं । पहली वस्तु स्वीकार लेने पर दूसरी वस्तु अपने आप आजायेगी पहली वस्तु के स्वीकार होने पर अन्त:करण में संतोष, मन की शान्ति आजायेगी । बाद में भजन करने का आनंद मिलेगा । एकवार नदी के किनारे एक महात्मा बैठे थे, वे जोर-जोर चिल्ला कर कह रहे थे कि जिन्हे जो चाहिये ले जाइये । लोगों को एसा लगा कि महात्मा की दिमाग खराब हो गया है । इसलिये इस तरह चिल्ला रहा है । लेकिन कोई एक ने पूछा कि आप क्या दे रहे हैं ? महात्माने कहा कि आपको क्या चाहिये ? वह व्यक्तिने कहा कि धन, दौलत, संपत्ति, देकर बड़ा मनुष्य बना दीजिये । महात्माने दो पुडिया देकर कहा कि एक में हीरा है और दूसरे में मोती है । वह भाई उस प्रथम पुडिया को खोला तो उसमें लिखा था समय, दूसरी पुडीया में लिखा था धैर्य, यह देखकर वह भाई महात्माजी से पूछा कि यह क्या है ? महात्मा ने कहा कि "समय" हीरा से भी अधिक मूल्यावान है । आप अपने समय को खर्च करके धन की प्राप्ति कर सकते हो, परंतुधन का खर्च करके समय प्राप्त नहीं कर सकते । अपने पास करोडो रुपये हों परंतु अपना समय पूरा हो गया हो, आयुपूर्ण हो गयी हो, तो ज्ञान किस काम आयेगा । समय कभी रुकता नहीं । प्रतिदिन जिस तर समय वीत रहा है उसी तरह अपनी आयु भी कम होती जा रही है । जब समय खर्च करके फल न मिले तो "धीरज रुपी" मोती जिसके पास है उस व्यक्ति को निश्चित ही सफलता मिलती है ।

किसी भी व्यक्ति की ईच्छा पूर्ण न होती । इच्छा पूर्ण अपने हाथ की वात नहीं है । परंतु इच्छा का त्याग तो अपने हाथ में है । "इच्छा" तथा "कामना" ही मनुष्य के मृत्यु का कारण है । मरते हुए व्यक्ति की कुछ न कुछ इच्छा बाकी रह जाती है । इसलिये आसक्ति का त्याग करके शरणागति स्वीकार करने से जीवन का कल्याण हो जाता है । क्योंकि जीव परमात्मा का अंश है ।

परमात्मा को अपनामान लेने से शरागत होने में सरलता हो जायेगी । बालक मानकर गोंद में जाकर बैठजाने से प्रयत्न करने की जरुरत नहीं । अपने आप सबकुछ मिल जाता है । बालक को इतनी व्याकुलता होती है कि मां के बिना उसका एक पल भी नहीं चलता । इसी तरह परमात्मा को प्राप्त करने के लिये भी व्याकुलता होनी चाहिये । परमात्मा को प्रेम से पुकारने की जरुरत है । हम परमात्मा का हाथ छोडकर संसार का साथ पकड़ लेते है जिससे अहं आ जाता है । अहंकार से ही पतन होता है । अहंकार त्याग करना सरल है, क्योंकि वह स्वाभाविक नहीं है, वास्तविक नहीं है । वास्तविक किसे कहेंगे ? सूर्य प्रकाश स्वाभाविक (वास्तविक) है । गरमी सूर्य की साथ आती है । वास्तविकता का त्याग करना सम्भव नहीं है । हम जन्मे तब अहंकार नहीं था, बालक जन्म के बाद संसार में आकर सबकुछ देखता है और वैसा करता है । मनुष्य क्षणभंगुर वस्तुओं का उपार्जन करने से अहंकार आता है । मनुष्य जब संसार छोड़के जाने लगता है तब अहंकार नहीं रहता । अहंकार तो बीच के काल में आता है । इसलिये अहंकार छोड़ना सरल है । बिमारी मनुष्य के चेहरे से जानी जा सकती है । इसी तरह मनुष्य के गुण तथा अवगुण का भी ख्याल आ जाता है । सत्संग में आने से कुछ गुण तो अवश्य आयेगा । अग्नि के समीप जाने पर गर्मी तो लगती ही है । अग्नि की आंच लगना स्वाभाविक धर्म है । इसी तरह सत्संग में बैठने से मन निर्मल बनता है । अन्तःकरण शुद्ध होता है । धीरे-धीरे उसमें अवसर होने लगती है । अपने भीतर का दुर्गुण धीरे-दीरे निकल जाता है ।

●

माहात्म्य

- सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

माहात्म्य समग्र आध्यात्म साधना का प्राण है इसके विना साधना रुक नहीं सकती और प्रगति भी नहीं हो सकती । आत्यंतिक मुक्ति की साधना में भगवत्स्वरुप का ज्ञान तथा माहात्म्य में निश्चय अनिवार्य है । जिस तरह लौकिक प्रकार की सिद्धि मे सफलता प्राप्त करने के लिये पुरुषार्थ मुख्य होता है, इसी तरह ध्यात्म जगत में माहात्म्य की समझ अनिवार्य होता है । जब तक माहात्म्य समझ में नही आयेगा तब तक व्यक्ति आगे की तरफ नहीं बढेगा । कितनी भी आपत्ति आयेगी तो भी उसे पारकर के आगे बढेगा । प्रभु की महिमा हो तो सम्पूर्ण सत्संगी कहा जायेगा । आत्यंतिक मोक्ष चाहने वाले को महाराज की आज्ञा में रहना होगा । संतो में निष्ठा विशेष रुप से हो तो आचार्य महाराजश्री के वचनो में दृढता होनी आवश्यक है । शास्त्र में विश्वास रखना दोष नहीं देखना होगा । काम, क्रोध, मान ईर्ष्या, मत्सर इत्यादि दोनों का त्याग करना होगा । अन्तःकरण तथा पंच विषयों से उपर होना होगा । किसी का अपराधन होजाय इसका सदा ध्यान रखना होगा । तभी परमात्मा को प्राप्त करना संभव है । जिस तरह से विद्युत का करंट होता है ठीक उसी तरह प्रभु की महिमा है, चारो तरफ प्रकाश ही प्रकाश फैल जायेगा । महिमा हृदय की तरह है अर्थात् मुख्य स्थान पर है । जब हृदय मजबूत होगा तब सभी कार्य सरल हो जाते हैं, इसी तरह माहात्म्य दृढ होगा तो प्रभु सरलता से मिल जायेंगे । महिमा के दृढ होने पर नवधा भक्ति उसी में स्थिर होती है । जितनी महिमा समझी जायेगी उतनी अधिक प्रकाश हृदय में होगा । सांसारिक वासना के त्याग से महिमा को समझा जा सकता है । जिस तरह प्राण विना की शरीर, सुगंधविना का पुष्प, जैसे नमक विना का भोजन होता है ठीक वैसे ही महिमा विना का सत्संग फीका होता है । महिमा के होने पर दिनप्रतिदिन सत्संग बढता रहता है ।

मायिक जीव को मायिक वस्तु अच्छी लगती है । नाली का कीडा नाली ही पसंद करता है । बालक चिंतामणी के महत्व को नहीं समझता उसे वह बदरी फल समझता है । महिमा के विना राजा परिक्षीत को भी संशय हो गया नरक में पड़ा हुआ जीवन भगवान की धर्मकुल

की, संत-हरिभक्त की महिमा समझता है तो मोक्षाधिकारी हो जाता है । इसके लिये भगवान की महिमा का निरन्तर गुणानुवाद करते रहतना चाहिये । महाराज अपने अक्षरधाम को छोडकर मुक्तोतथा पार्षदो को साथ में लेकर पृथ्वी पर पधारे हैं । शरीर छोड़कर अक्षरधाम में जो प्राप्त होने वाले हैं वे इस धरती पर सशरीर मिले हैं, इसलिये यहीं घर महिमा समझकर उनकी भजन करनी चाहिए । महिमा के विना चाहे कितना भी शक्ति शाली हो लेकिन भगवान के गुण को नहीं जानेगा । महिमा पंडित होने पर कल्याणकारी गुण न हो तो प्रभु की प्राप्ति नहीं होती है । सम, दम, संतोष जैसे गुण हों और हृदय में भक्ति हो तो निश्चित ही उसका कल्याण होगा । माहात्म्य के साथ भक्ति होने पर विषय वासना टल जाती है । लोया के १७ वें वचनामृत में श्रीहरि ने कहा है कि ''जो भगवान के संतो के माहात्म्य को समझें है उनकी समझ सत्संग के मूल तक है ।

यह माहात्म्य सहित भक्ति किस तरह मिलती है । श्रीजी महाराज वड़ताल के वचनामृत में यह वात समझाई है । जो अपने अपने धर्म में रहकर मन-कर्म-वचन से भक्ति करते है उनके हृदय में माहात्म्य के साथ भक्ति का उदय होता है । इसी तरह गढडा के ५ वें वचनामृत में कहे हैं कि शुक-सन-कादिक जैसे बड़े पुरुष भगवान की भक्ति किये, भगवान के अवतारों की कथा का श्रवण करने से हृदय में भक्ति उत्पन्न होती है । माहात्म्य के साथ भक्ति का उदय सत्पुरुषो के सत्संग से होती है ।

भक्ति उत्पन्न हो जाय तो रक्षण की भी जरुरत पड़ती है, संवर्धन की भी जरुरत पड़ती है । इसके लिये सत्पुरुषों का सत्संग करना जाहिये । इसके लिये पवित्र स्थान में रहना चाहिये । सत्पुरुष के वचन का पालन करने से भी हृद यमें भक्ति दृढ होती है । इससे भगवान की प्रसन्नता मिलती है । जिन्हे भगवानकी तथा भगवान के भक्त की महिमा समझ में आ गयी उनके सभी काम पूर्ण हो गये । जिन्हे महिमा नही वे दुःखी होते है । इन्द्रियां वश में नहों तो भी वे पीड़ा देती है । इन दोषों को समझकर प्रभु की महिमा में मन लगाने से जीवन का महत्व समझ में आयेगा ।

●

जैसे संग वैसा रंग

- पटेल लाभुबहन मनुभाई (कुंडाल ता. कडी)

संग किसे कहा जायेगा । इस विषय में श्रीहरिने गढडा प्रथम के ७८ वें वचनामृत में कहते है कि ''सारो भुंडो जे संग थाय छे तेनी विकृति एम छे जे, जेनो संग थाय ते साथे कोई रोती अंतर रहे नही, त्यारे तेनो संग थयो जाणवो अने ऊपरथी तो शत्रु ने पण हैयामां घालीने मड़े छे पण अंतरमां तो ते साथे लाखो गाउनुं छेटु छे । एवी रीते ऊपरथी संग होय ते संग न कहेवाय अने मन, कर्म, वचने करीने संग तो परमेश्वर अथवा परमेश्वरना भक्त तेनो ज करवो जेथी जीवतुं कल्याण थाय पण पापीनो संग तो क्यारेय न करवो ।''

जीवन में बाल्यावस्था से खूब कष्ट सहन करके मां-बाप बाल कको शिक्षा देते हैं, अच्छा संस्कार देते हैं। यदि उसमे कुसंग रुपी जहर का टीपा पड़ जाय तो जीवन जहर से समान हो जाता है ।

वडताल का जौबन पगी महान डांकू था । बाल्यावस्था में संस्कारी मां बाप का बेटा था । बाल्यावस्था में उसके मा-बाप मर गये । वह बाल्यावस्था में गाँव के कुसंगी लड़को के साथ संगत में पड़ गया, परिणाम स्वरुप उनके साथ चोरी -डकेती लूट-पाट करने लगा । लेकिन संयोगवश समय वीतते भगवान स्वामिनारायण की भेटं होते ही अपने सारे कुसंगो का त्याग करके महान भक्त हो गया । इसी तरह अपने जीवन में कुसंग का त्याग करके, व्यसन का त्याग करके खराब मित्रों का सहचार छोड़कर अच्छी सत्संगति में मन लगाना चाहिए ।

जैसे कोई अच्छी पुस्तक हो लेकिन उसमें दीमक लग

जाय तो किसी काम की नहीं रह जाती । इसी तरह हमारे जीवन में भी कुसंग का सहचार हो जाय तो दीमक की तरह खत्म कर देता है ।

श्रीजी महाराज ने भी शिक्षापत्री के २८ वें श्लोक में अच्छी संगत करने की वात की है । ''जो मनुष्य भक्ति का या ज्ञान का आलंबन करके स्त्री, द्रव्य, रसास्वाद के विषय में अतिशय लोलुप हो उसका समागम कभी नहीं करना चाहिये ।

''जैसा संग वैसा रंग'' लगता है । वस्तु तो वही होती है लेकिन जैसी संगत करती है वैसी ही उसपर रंग चढता है । आकाश की बूंद बरसात बनकर गन्ने पे गिरती है तो शक्कर हो जाती है । वही बूंद मछली के मुख में गिरती है । तो मोती हो जाती है । वही बूंद सांप के मुख में गिरती है तो जहर बन जाती है । इस लिये अच्छे संगत की पसन्दगी करनी चाहिये । अब हमें यह विचार करना होगा कि हमारी संगति कैसी होनी चाहिए गुणातीतानंद स्वामीने एकवात में लिखा है कि कोई व्यक्ति किसी उपाय से सत्संग में रहे तो वह टिक जाता है और वह अच्छा भी हो जाता है । जो खराब का संग करता है तो पतित हो जाता है । इसलिये उत्तम सत्संग करना चाहिये । खराब की संगत नहीं करनी चाहिये ।

अपने से उत्तम की संगत करेंगे तो कहीं कुछ तकलीफ आयेगी तो महिमा गिरने नहीं देगी, निश्चित ही किसी महापुरुष का साहचर्य करा देगी - जिससे गिरने से बच जायेंगे ।

•

अलौकिक रंगोत्सव

- जानकी नीकीकुमार पटेल (घाटलोडिया)

श्री नरनारायणदेव के धाम अमदावाद में श्रीहरिने खूब धूमधाम से फूल दोलोत्सव किया । स्वामिनारायण भगवान संतो द्वारा पुष्प का झूला बनवाये, उस पर श्रीनरनारायणदेव को रखकर आरती उतारे और झुलाये । इसके बाद चौक में हजारों संत-हरिभक्त एकत्रित हुये । महाराजने सभी को आज्ञा किये कि रंगोत्सव प्रारंभ हो गया ढोल-नगारे बजने लगे । अपने हाथ में रंग की पिचकारी लेकर संत हरिभक्तों के ऊपर किंशुक के पुष्पराग से भिगोने लगे । संत भी अपने हाथ में पिचकारी भर भरकर फेंकने लगे । हरिभक्त भी इस आनंद का लाभ ले रहे थे । यह अलौकिक उत्सव था । यह एक दिव्य लीला थी । इसमें कोई छोटा बड़ा नहीं था ।

इस आनंद में सभी डूब गये थे । सभी अपने में खो गये थे । इस रंगोत्सव में लोया से सुराखाचर भी आये थे । सुरा खाचर सोमला खाचर के ऊपर मुट्ठी भरकर गुलाब फेंका । थोड़ी गुलाब आंख में भी गयी । इस लिये सोमला खाचर एक तरफ बैठ गये । यह देखकर ब्रह्मानंद स्वामी आगे आकर सुरा खाचर से कहे कि चलो मेरे ऊपर डालो । सुरा खाचरने स्वामी को रोका फिर इसी तरह दोनो एक दूसरे पर रंग की बौंछार करने लगे । यह दृश्य देखते बन रहा था । सभी आनंद में डूबे हुए थे । चारो तरफ से रंग की बरसात देख कर महाराज हंसने लगे । संत तथा भक्त भी महाराज को हंसते देखे तो वे भी हंसने लगे । महाराजने कहा कि देखो आज सुरा खाचर तथा ब्रह्मानंद स्वामी अपने को भूल गये हैं कि हम भक्त है हम स्वामी है । सभी एक दूसरे पर रंग की बरसात कर रहे हैं, एक दूसरे को लिपट का रंग पोत रहे हैं ।

अंत में महाराजने ताली बजाकर हाथ ऊंचा किया और संत-भक्तों की जयजयकार किया । श्री नरनारायण देव का पूरा चौक लाल-लाल हो गया । मंदिर का भाग भी लाल-लाल हो गया, जिधर देखो ऊधर लाल ही लाल दिखाइ दे रहा था । आकास में सूर्य लाल, नीचे संत, लाल, भक्त लाल, जहाँ धर्म के लाल हों वहाँ सब लाल ही लाल होता है । रंग लीला समाप्त करके श्रीहरि संत-भक्तों के साथ साबरमती-नारणघाट स्नान करने पधारे ।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद में परम कृपालु श्री नरनारायणदेव का १९२ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

सर्वोपरि सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान ने संप्रदाय के अहमदाबाद में स.गु. आनंदानंद स्वामी से महा मंदिर का निर्माण करवाकर स्वस्वरुप श्री नरनारायणदेव की स्थापना की। संवत १८७८ को फाल्गुन शुक्लपक्ष-३ से लेकर इस शहर की अविरत प्रगति हुई।

आज फाल्गुन शुक्ल-२/३ को ता. ३-३-१४ को सोमवार को परमकृपालु महाप्रतापी देव श्री नरनारायणदेव का १९२ वाँ पाटोत्सव श्रीहरि के तीन अपर स्वरुपो द्वारा विधिवत किया गया था। इस प्रसंग के उपलक्ष में ता. १-३-१४ से ता. ३-३-१४ तक स.गु. ब्र. स्वामी वासुदेवानंद कृत श्रीमद् सत्संगिभूषम त्रिदिनात्मक पारायण संप्रदाय के विद्वान संत पू. स.गु. शा. स्वामी निर्गुणदासजीने की। सहिंता पाठ में शा. माधव स्वामी गुरु शा.स्वा. सिद्धेश्वरदासजी थे।

पाटोत्सव के यजमान अ.नि. प.भ. महासुखलाल जेठालाल सोनी, अ.नि. ताराबहन महासुखलाल सोनी परिवार के प.ब. सुरेशभाई महासुखलाल सोनी परिवार (पाटणवाले) यजमान थे।

फाल्गुन शुक्ल-१ महापूजा आदि कार्यक्रम किये थे। फाल्गुन शुक्लपक्ष-१ तीन को उस ५ से ६-३० को यजमानो द्वारा ठाकुरजी का पूजन तथा ६-३० से ७-०० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों परमकृपालु श्री नरनारायणदेव आदि देवों का षोडशोपचार महाभिषेक वेदविधिसर संपन्न हुआ। इस प्रसंग के दर्शन देवों को भी दुर्लभ थे।

प्रासंगिक सभा में प्रथम पू. महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी ने प्रासंगिक उद्बोधन किया। यजमान परिवारने समस्त धर्मकुल का पूजन आरती करके आशीर्वाद लिये।

उसके बाद कथा के पूर्णाहुति की आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने की। संतो ने अपनी प्रेरक वाणी का लाभ दिया। पू. महंत स्वामीने आगामी श्री नरनारायणदेव महोत्सव की जानकारी दी।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री प्रसन्न होकर श्री नरनारायणदेव का दृढ आश्रय, नियम, निश्चय, पक्ष रखने का अनुरोधकरके आशीर्वाद दिये।

उसके बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने श्री नरनारायणदेव की अन्नकूट आरती की।

समग्र प्रसंग में स.गु. स्वामी हरिचरणदासजी (कलोल) स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी (नारणघाट), ब्र. स्वामी राजेश्वरानंदजी, स.गु. कोठारी जे.के. स्वामी, योगी स्वामी, शा. नारायणमुनि, भक्ति स्वामी पुजारी, नटु स्वामी तथा भंडारी राम स्वामी आदि संतो-पार्षदोने सुंदर सेवा की थी। (शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से शिक्षापत्री का पूजन-आरती की गयी

परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सांनिध्य में कालुपुर श्री स्वामिनारयण मंदिर में प्रसादी के दिव्य सभा मंडप में माघ शुक्ल-५ (वसंत पंचमी) को प्रातः ८-३० बजे प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से लिखी गयी शिक्षापत्री का पूजन अर्चन किया था। इस प्रसंग पर संत-हरिभक्त दर्शन का लाभ लेकर धन्य हो गये थे। सभा में संत तथा हरिभक्तों ने २१२ श्लोकों का पठन करके शिक्षापत्री जयंती का उत्सव मनाये थे।

(शा. नारायणमुनिदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में १८ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को आज्ञा से तथा स.गु. देवप्रकाश स्वामी तथा स.गु. पी.पी. स्वामी (महंत श्री नारायणघाट) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में विराजमान देवों का पाटोत्सव माघ कृष्ण-५ को विधिपूर्वक मनाया गया था। पाटोत्सव के मुख्य यजमान प.भ. वसंती बहन बाबूलाल पटेल (हीरापुर-नारणपुरा) परिवार ने लाभ लिया था।

ता. २०-२-१४ को प्रातः प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से देवों का षोडशोपचार महाभिषेक किया गया था। बाद में अन्नकूट की आरती उतारकर सभा में बिराजमान हुए थे। यजमान परिवार ने धर्मकुल का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था।

इस प्रसंग पर बहुत सारे संत उपस्थित थे जिस में स.गु. महंत शा. स्वा. हरिकृष्णधासजी, ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी, महंत शा. स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी (धोलका), शा. स्वा. विश्वप्रकाशदासजी (वडनगर) तथा कांकरिया, नारणपुरा, एप्रोच, कालुपुर मंदिर से संत पधारे थे। हरिभक्त की विशाल संख्या में उपस्थित थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। पाटोत्सव में दोनो महंत स्वामी के मार्गदर्शन में सत्संग समाज तथा श्रीनरनारायणदेव युवक मंडलकी सेवा सराहनीय थी।

(शा. दिव्यप्रकाशदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर वसंत पंचमी शिक्षापत्री पूजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजी की प्रेरणा से गुजरात की सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक नगरी वडनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में घनश्याम

महाराज के संमुख वसंत पंमची को शिक्षापत्री का पूजन-अर्चन किया गया था । को. स्वा. विश्वप्रकाशदासजी तथा स्वा. अभिषेकप्रसाददासजीने सभा में शिक्षापत्री के २१२ श्लोकों का पठन किया था। अंत में सभी प्रसाद लेकर प्रस्थान किये थे।

(नवीनभाई भावसार)

श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर भीमपुरा का ६ छठ्ठा पाटोत्सव तथा पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारायणघाट महंत) की प्रेरणा से अ.नि. चौधरी गोबरभाई प्रभुदास परिवार के प.भ. भरतभाई डाह्याभाई चौधरी तथा प.भ. सुरेशभाई डाह्याभाई चौधरी इत्यादि परिवार की तरफ से श्री स्वामिनारायण मंदिर भीमपुरा का ६ठ्ठा पाटोत्सव तथा उसके उपलक्ष्य में श्रीमद् भगवतगीता पंचदिनात्मक पारायण स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णदासजी के वक्तापद पर संगीत के साथ ता. ४-२-१४ से ता. ८-२-१४ तक धूमधाम के साथ मनाया गया था।

ता. ८-२-१४ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। उन्हीं के हाथों ठाकुरजी का षोडशोपचार पूजन करके अभिषेक किया गया था । सभा में यजमान परिवार ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था । प्रासंगिक सभा में स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजी, ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी, महंत स्वा. श्यामसुंदरदासजी, शा.स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी, शा. स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी, भंडारी स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी, शा.स्वा. सिद्धेश्वरदासजी, श्री वल्लभ स्वामी, शा. छपैया स्वामी, निलकंठ स्वामी इत्यादि संत अलग-अलग स्थानों से पधारे थे। सभी संतो की प्रेरक वाणी के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। (शा. चैतन्यस्वरुपदासजी, शा. दिव्यप्रकाशदासजी)

माणेकपुर (जौधरी का) गाँव में महोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा धर्मकुल के आशीर्वाद से अ.नि. चौधरी सेंधाभाई लवजीदास (मुखिया) के पुण्य स्मृति में सोनीबा सेंधाभाई चौधरी की प्रेरणा से माणेकपुर गाँव में स्वा. करसनदासजी द्वारा बनवाये गये श्री स्वामिनारायण मंदिर के २७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव भव्याति भव्य ढंग से २९-१-१४ से २-२-१४ तक मनाया गया था । इस प्रसंग पर स.गु. निष्कुलानंद काव्य के अन्तर्गत धीरजाख्यान का पारायण, संहितापाठ, ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट, शोभायात्रा, रात्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रम किये गये थे । समग्र महोत्सव के यजमान सोनीबा सेंधाभाई चौधरी कृते रमणभाई बलदेवभाई, मणीलाल, मूलजीभाई, अमृतभाई, दशरथभाई, इश्वरभाई इत्यादि परिवारवालों ने अलभ्य लाभ लिया था।

इस शुभ प्रसंग में ता. २-२-१४ को २७ गोड़ चौधरी समाज के १०००० से १५००० जाति के लोग महोत्सव में उपस्थित थे।

महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री धीरजाख्यान का पारायण किया गया था, जिसके वक्ता स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी, स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी, स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी, स्वा. रामकृष्णदासजी थे । समग्र उत्सव के मार्गदर्शक स्वा. देवप्रकाशदासजी तथा छोटे पी.पी. स्वामी थे।

महोत्सव के प्रथम दिन यजमान परिवार तथा गाँव के हरिभक्त पोथीयात्रा निकालकर सभा मंडप पधारे थे । भाइयों की सभा में प.पू. बड़े महाराजश्रीी तथा बहनो की सभा में प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी बहनों को दर्शन का लाभ देने के लिये पधारी थी । इसके बाद प्रतिदिन अलग-अलग स्थानों से संत पधारकर सत्संग का आनंद देते थे। करीब १६० जितने संत पधारे थे।

व्याख्यान माला का भी आयोजन किया गया था, जिस में स्वा. हरिकेशवदासजी (गांधीनगर), स्वा. निर्गुणदासजी (असारवा), स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी (माणसा) स्वा. हरिॐप्रकाशदासजी (नारणपुरा), स्वा. विश्वस्वरुदासजी (कालुपुर) ने सत्संग का लाभ दिया था। महोत्सव दरम्यान रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया था। प्रथम दिन राजगर्बा, दूसरे दिन मातृवंदना (अश्विन जोषी) सत्संग डायरा) ओसमान मीर) रास गर्बा (देवांग पटेल) ने भाग लेकर अगल बगल के गाँवों से आये भक्तों को आनंद प्रदान किये थे । यह महोत्सव मात्र माणेकपुर के लोगों का नहीं था अपितु बाहर के लोग भी इसका लाभ लिये थे । महोत्सव का लाइव टेलीकास्ट श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर की वेबसाईठ **www.swaminarayan.in** तथा **www.livevisiter.com** पर किया गया था। इस प्रसंग का लाभ विदेश के लोगों ने भी लिया था।

महोत्सव के अंतिम दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. अ.सौ. गादीवालाजी तथा प.पू भावि आचार्य महाराजश्री पधारे थे । सर्व प्रथम प.पू. महाराजश्री ठाकुरजी का अभिषेक करके तथा आरती उतारकर अपने स्थान पर पधारे थे । पुन: मंदिर में पधारकर अन्नकूट आरती उतारकर शोभायात्रा में पधारे थे। प.पू. महाराजश्री के साथ प.पू. लालजी महाराजश्री भी थे। बहनो को आशीर्वाद देने के लिये प.पू. गादीवालाजी यजमान परिवार के निवास स्थान पर पधारी थी । सभा में प.पू. लालजी महाराजश्री के हाथों द्वारा पूर्णाहुति की गयी थी । यजमान परिवार ने प.पू. महाराजश्री का पूजन किया था। सभा में संतो ने आशीर्वचन का लाभ दिया था। जिसमें शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी, ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी थे । अन्त में प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। गाँव के सभी लोग पांच दिन तक वहीं पर प्रसाद लिये थे।

संतो की सेवा प्रेरणारुप थी । श्री नरनारायणदेव युवक

मंडल तथा गाँव के अन्य युवक मंडल की सेवा भी सराहनीय थी। (समस्त सत्संग समाज माणेकपुर - चौधरी का)

जामफलवाडी (रामोल) में शाकोत्सव पाटोत्सव संपन्न

प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी की प्रेरणा से स्वामिनारायण मंदिर जामफलवाड़ी का प्रथम वार्षिक पाटोतसव तथा शाकोत्सव ११-२-१४ धूमधाम से मनाया गया था।

सभी भक्त एकत्रित होकर सत्संग को प्रतिष्ठित करने में पूर्ण योगदान दिये थे। प्रातः ६-३० बजे यजमानश्री द्वारा ठाकुरजी का पूजन-अर्चन किया गया था। बाद में ८ बजे से ९ बजे तक अखंड धुन की गयी थी। ९ बजे से सभा प्रारंभ हुई, जिस में स्वा. हरिकृष्णदासजी, स्वा. देवप्रकाशदासजी, स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी, स्वा. नीलकंठदासजी, स्वा. कुंज विहारीदासजी, चेतन स्वामी, श्रीजी स्वामी इत्यादि संतोने आशीर्वाद दिये थे। सभा विसर्जन के बाद अन्नकूट की आरती उतारी गयी थी। अन्त में सभी ने शाकोत्सव का प्रसाद लिया था। समग्र प्रसंग में बाल मंडल की सेवा सराहनीय थी।(समस्त सत्संग समाज - जामफल वाडी)

सायरा गाँव में प्रथम शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहा के गाँव में प.पू. बड़े महाराजश्री के हाथों शाकोत्सव संपन्न हुआ। जिस के प्रेरक स्वा. अखिलेश्वरदासजी (मथुरा) थे। यजमान परिवार में से पटेल हीराभाई रेवाभाई कृते रितेश रेवाभाई पटेल ने प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजनअर्चन किया था। संतो में से स्वा. हरिस्वरुपानंदजी ने भगवान का माहात्म्य समझाया था। समस्त सभा को प.पू. बड़े महाराजश्री हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। को. स्वा सर्वेश्वरदासजी तथा आनंद स्वरुप स्वामी तथा नरनारायणदेव युवक मंडल ने सुंदर सेवा की थी। (दीपेस पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा का १६ वाँ पाटोत्सव मनाया गया था।

पाटोत्सव की तैयारी स्वा. विश्वेश्वरदासजी (मथुरा) ने करवायी थी। ठाकुरजी का अभिषेक अन्नकूट तथा कथा इत्यादि का आयोजन किया गया था। यहाँ की महिला मंडल की सेवा सराहनीय थी। समग्र आयोजन स्वा. अखिलेश्वरदासजी (मथुरा) के मार्गदर्शन में हुआ था। (रजनीभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बायड में द्वितीय शाकोत्सव मनाया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महंत शा. स्वा. अखिलेश्वरदासजी के मार्गदर्शन तथा कोठारी श्री जगदीशभाई पटेल, श्री जगदीशभाई जेठाभाई पटेल,देव युवक मंडल आदि सभी के सहकार से श्री स्वामिनारायण मंदिर बायड में द्वितीय भव्य शाकोत्सव मनाया गया प्रासंगिक सभा में शा. स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजीने सुंदर कथामृत का पान करवाया। संतो ने अमृतवाणी का लाभ दिया। बायड और उसके आसपास के गाँव के भक्तोंने कथामृत का पान करवाकर शाकोत्सव मनाया। रोटी की सेवा बहनो ने की थी। गाँव के हरिभक्तों द्वारा गाँव के कोठारीश्री का सन्मान किया गया।

(पूजारी विश्वेरददासजी, मथुरा)

हीरावाडी में श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण कथा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारायणघाट) की प्रेरणा मार्गदर्शन सेश्री नरनारायणदेव युवक मंडल हीरावाडी के आयोजन से ता. २३-१-१४ से ता. २७-१-१४ तक आगामी श्री नरनरायाणदेव महोत्सव का हीरावाडी में सुंदर पारायण आयोजीत किया गया।

शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर) के वक्तापद पर श्रीमद् सत्संगिजीवन कथा का (रात्रि) संगीत के साथ कथामृत पान करवाया। इस प्रसंग पर पोथीयात्रा, जन्मोत्सव, गादी अभिषेक श्री नरनारायणदेव प्रतिष्ठा महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। कोटेश्वर गुरुकुल के बच्चो ने भी सुंदर कार्यक्रम किया।

ता. २६-१-१४ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत-मंडल के साथ पधारे थे। आयोजीत शाकोत्सव शब्जी का बघार करके आशीर्वाद दिये।

इस प्रसंग में स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, ब्र. पू. राजेश्वरानंदजी, स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट), शा. दिव्यप्रकाशदास, स.गु. स्वामी लक्ष्मणदासजी, माधव स्वामी, आदि संतगण पधारे थे। अहमदाबाद हवेली की सांख्ययोगी बहने भी पधारी थी। ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी के हाथों से श्री नरनारायणदेव धार्मिक परीक्षा में तथा माध्यमिक तथा प्राथमिक शाला में उत्तम गुण पाने होने वाले को प.पू. लालजी महराजश्री के आशीर्वाद से प्रमाणपत्र के साथ सुदंर इनाम देकर प्रोत्साहित किया।

पारायण के मुख्य यजमान श्री गणेशभाई बहेचरभाई पटेल (विहार) ह. घनश्यामभाई तथा सतीषभाई आदि सभी का पूजन आचार्य महाराजश्रीने सन्मान करके आशीर्वाद दिये। सभा के पोषण कर्ता श्री जयंतीभाई तथा गोरधनभाई को भी सन्मानित किया था। (गोरधनभाई मीनापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा का २० वाँ पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा शा.स्वा. माधव स्वामी तथा उनके दादा गुरुकी शुभ प्रेरणा से तथा श्रीमती भद्राबहन दिलीपभाई वकील परिवार के यजमान पद पर नारणपुरा मंदिर में बिराजमान श्री घनश्याम महाराज का २० वाँ पाटोत्सव ता. ४-२-१२ से ९-२-१४ तक विधिपूर्वक मनाया गया।

इस प्रसंग पर पोथीयात्रा यजमान के घर से मंदिर तक पहुंची

। इस दिन शाम ७ बजे प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से ब्रह्मानंद होल का उद्घाटन विधिपूर्वक किया गया । अंत में प.पू. बड़े महाराजश्रीने होल की प्रशंसा करके कहा कि, हमें भी होल देखकर भोजन करने का मन हो रहा है । श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचदिनात्मक कथा महंत शा.स्वा. हरिॐप्रकाशदासजीने कि । अनेक संतगण पधारे थे । ता. ८-२-१४ को घनश्याम महाराज का षोडशोपचार अभिषेक प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से सम्पन्न हुआ ।

रात में श्री जयेशभाई सोनी, राज वकील तथा जय वकील (यजमान) द्वारा भजन संध्या कार्यक्रम किया गया । हरिभक्तों को दोनो समय प्रसाद प्रदान करने की सेवा में शा. माधव स्वामी के मार्गदर्शन से मुकुंद स्वामी, मुक्तस्वरुप स्वामी तथा देव स्वामी तथा महंत स्वामी के भूदेव शिष्यगण पधारे ।

सभा संचालन शा. प्रेमस्वरुपदासजीने सुंदरता से किया प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । समस्त सभा में प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । महिला मंडल तथा श्री नरनारायणदेव युवक की सेवा सुंदर थी । (विशाल भगत)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वा. धर्मवल्लभदासजी एवं हरिवल्लभदास, शा. व्रजवल्लभदासजी की प्रेरणा से बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर में धनुर्मास का कार्यक्रम विधिपूर्वक संपन्न हुआ था ।

सर्व प्रथम आरती, धुन, रास, संतो द्वारा बाल चरित्र कथा का आयोजन होता था । हरिभक्त प्रतिदिन अलग-अलग प्रभु को भोग लगाते थे । १२-१-१४ को शाकोत्सव मनाया गया था । जिस में महंत स्वामी तथा अमृतभाई प्रेरक थे । अनेक भक्तों ने भी सेवा की थी । मकर संक्रांति के दिन संत-भक्त झोली के लिये हरिभक्तों के घर घर धूमे थे। ता. २०-१-१४ को प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी बहनो को आशीर्वाद देने पधारी थी । (प्रवीणभाई उपाध्याय)

श्री स्वामिनारायण मंदिर महादेवनगर शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा संतो की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में ता. १७-१-१४ को प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों भव्य शाकोत्सव मनाया गया था । प्रासंगिक सभा में स्वा. हरिकृष्णदासजी, स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, राम स्वामी, स्वा. हरिकृष्णदासजी (एप्रोच) इत्यादि सन्तों के प्रेरक वाणी के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । सभी भक्तजन शाकोत्सव का प्रसाद लेकर विसर्जित हुए थे । व्यवस्थापक कमेटी तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल एवं महिला मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी । सभा संचालन स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने किया था। (नटुभाई हरगोवनभाई कोठारी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत शा.स्वा. उत्तमप्रियदासजी एवं स्वा. नारायणप्रसाददासजी की प्रेरणा से प.भ. जसवंतभाई कांतिलाल मोदी परिवार की तरफ से श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा का पंचम पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । इसके उपलक्ष्य में निष्कुलानंद स्वामी कृत सिद्धिग्रन्थ की त्रिदिनात्मक कथा शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम) के सुमधुर कंठ से संपन्न हुई थी । इस प्रसंग पर अमदावाद से प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे। यजमान परिवारने प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन किया था । प.पू. लालजी महाराजश्रीने सभाजनों को हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

इसके अलांवा हरियाग, जपयात्रा, महाभिषेक, महानैवेद्य, षोडशोपचार पूजा, धर्मकुल पूजन, संत पूजन इत्यादि कार्यक्रम किये गये थे । (हितेन्द्रभाई राओल)

मणीनगर (सोजा) गाँव में श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में सर्व प्रथम सतसंग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से मणीनगर (सोजा) गाँव में ता. ६-२-१४ को श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में सर्व प्रथम सत्संग सभा हुई थी । जिस में पी.पी. स्वामी (नारणघाट) शा. राम स्वामी, शा. चैतन्य स्वामी, नीलकंठ स्वामी इत्यादि संतो ने कथा की थी । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने कीर्तन भक्ति की थी । ३०० जितने भक्त सभा का लाभ लिये थे ।

(कोठारी मोतीभाई)

मारुसणा गाँव में श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वामी हरीस्वरुपदासजी की प्रेरणा से मारुसणा मंदिर में ता. १९-१-१४ को हरिभक्तों के साथ मिलकर स्वामिनारायण भगवान की कथा इत्यादि करके श्री नरनारायणदेव के उपलक्ष्य में सुंदर सभा का आयोजन किया गया था । (कोठारी श्री मारुसणा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर उवारसद का द्वितीय पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पूज्य शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पूज्य शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदसजी (जेतलपुरधाम) के मार्गदर्शन में उवारसद श्री स्वामिनारायण मंदिर (भाईयों के तथा बहनो के) द्वितीय पाटोत्सव विधिवत मनाया गया था ।

पाटोत्सव के यजमान प.भ. श्री घनश्यामभाई शकराभाई पटेल तथा कथा के यजमान के उत्साह से स्वा. वासुदेवानंद ब्रह्मचारी द्वारा कृत श्रीमद् सत्संगिभूषण शास्त्रकी कथा ता. १-२-१४ से ५-२-१४ तथा स्वामी घनश्यामप्रकाशदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुई थी ।

ता. ५-२-१४ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । उन्हीं के वरद् हाथों अभिषेक, अन्नकूट, की आरती की गयी थी । इस प्रसंग पर शास्त्री पी.पी. स्वामी, प. के.पी. स्वामी (जेतलपुर) के सहयोग से यह कार्य संपन्न हुआ था । अनेकों स्थानों से संत पधारे थे । जिस में अमदावाद से शा. स्वा. जगतप्रकाशदासजी शा.स्वा.

पूर्णप्रकाशदासजी, शा.स्वा. नारायणप्रसाददासजी (मूली) पू. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू. शा. हरिॐ स्वामी, प्रेमस्वरुपदासजी, देव स्वामी, राम स्वामी, पू. योगी स्वामी, शा. हरिप्रकाशदासजी इत्यादि संत पधारे थे।

बहनो को दर्शन आशीर्वाद का सुख देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी । तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी पधारी थी . प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभा जनो को आशीर्वाद देते हुए कहा कि सभी सत्संगी सत्संग में खूब निष्ठा रखे, इससे आनेवाले परम्पराको ख्याल रहे। पांच दिनतक श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी। अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने अन्नकूट की आरती की थी। इस प्रसंग में शाकोत्सव धूमधाम से मनाया गया था। सभा संचालन स.गु. कोठारी शा. यज्ञप्रकाशदासजी (कांकरिया) ने किया था।

गाँव तथा अगल-बगल के गांव वालों ने कथा का तथा दर्शन के प्रसाद का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किया था।अन्त में प.भ. घनश्यामभाई पटेलने विधिकी थी।

(को. बाबूभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा वणझर में शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वा. स्वयं प्रकाशदासजी की प्रेरणा से ता. २-२-१४ को प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से सुंदर शाकोत्सव मनाया गया था। प्रासंगिक सभा में यजमान हरिभक्त प.भ. अरविंदभाई ठक्कर, श्री राजूभाई ठक्कर, श्री प्रकाशभाई, श्री नीतिनभाई, रमणभाई कोठारी तथा जेठाभाई इत्यादि हरिभक्तों ने प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजनअर्चन किया था। अलग-अलग स्थानों से संत पधारे थे। सभी ने सत्संग की महिमा का वर्णन किया था। सभा संचालन आनंद स्वामी ने किया था। अंत में प.पू. बड़े महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। (को. रमणभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नांदोल

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से नान्दोल श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव के साथ शाकोत्सव धूमधाम से मनाया गया था। इस प्रसंग पर पू. ध्यानी स्वामी का संत मंडल कथा का लाभ देकर सत्संगियों को प्रसन्न किये थे। पाटोत्सव के यजमान श्री दोलतभाई तथा शाकोत्सव के यजमान श्री रमणभाई छोटाभाई थे। कनीपुर, मुवाडा, सलकी, दहेगाँव इत्यादि गाँवों के हरिभक्त लाभ लिये थे। बहने अन्नकूट की सम्पूर्ण सेवा की थी। को. विष्णुभाई इत्यादि हरिभक्तों की सेवा सराहनीय थी।

(कोठारीश्री)

आनंदपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से आनंदपुरा में ता. २६-१-१४ को प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से शाकोत्सव धूमधाम से मनाया गया था। इस प्रसंग में शा. स्वा. सिद्धेश्वरदासजी तथा माधव स्वामी प्रेरणाश्रोत थे। अनेक स्थानों से संत पधारे हुए थे। सभा संचालन माधव स्वामी ने किया था।

(साधु जयवल्लभदास)

श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में आजीवन सदस्य बनाने की दौड़

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से परमकृपालु श्री नरनारायणदेव पाटोत्सव के उपलक्ष्य में श्री स्वामिनारायण मासिक के ११००० जितने आजीवन सदस्य बने थे। अभी मूली के लीलापुर गाँव में मूर्ति प्रतिष्ठा के प्रसंग पर तथा भक्तिनगर (हलवद) गाँव में प.पू. आचार्य महाराजश्री की उपस्थिति में स्वा. भक्तिहरिदासजी इत्यादि संतो की प्ररणा से ध्रांगध्रा के अंक के प्रति प.भ. अनिलभाई दुधरेजिया द्वारा ९० जितने आजीवन सदस्य बनाये गये थे।

अंक के प्रतिनिधियों से प.पू. लालजी महाराज का अनुरोधहै कि आजीवन सदस्य बनाने के लिये प्रत्येक गाँव में अभियान चालू रखें।

बालवा में ४२ वें जन्मोत्सव की प्रथम सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. भावि आचार्य महाराजश्री की अध्यक्षता में सितम्बर मास में भव्य दशम गादी अभिषेक महोत्सव तथा प.पू. आचार्य महारजाश्री का ४२ वाँ जन्मोत्सव कलोल में मनाया जायेगा, जिसके उपलक्ष्य में बालवा में सत्संग सभा शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर धाम) की प्रेरणा से प.भ. उदयनभाई महाराजा (विसनगर) के मार्गदर्शन में हुई जिस में भगवान का बल तथा धर्मकुल का आश्रय एवं मानवदेह की दुर्लभता पर कथा की गयी थी। केनेडा, आई.एस.एस.ओ. के प्रेसीडेन्ट श्री दशरथभाई चौधरी ने भी केनेडा सत्संग में प्रतिष्ठा उत्सव के अवसर शोभायात्रा में प.पू. महाराजश्री पधारे थे। विसनगर युवक मंडल तथा बालवा युवक मंडल द्वारा आगामी उत्सव की सफलता के लिये तन, मन, धन से लगजाने की जरुरत है। प्रसंग को सफल बनाने के लिये श्री स्वामिनारायण महामंत्र लेखन का कार्य प्रारंभ हो गया है (को. श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा)

मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली वसंत पंचमी पाटोत्सव रंगोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी श्यामसुंदरदासजी की प्रेरणा से मूली में श्रीहरि ने जिन प्रतापी देवों को प्रतिष्ठित किया था। उनका १९१ वाँ पाटोत्सव होगा, जिसके यजमान श्री रमेशभाई रणछोडलाल मारफतिया (अमदावाद-वर्तमान में अमेरिका) परिवार के यजमान पद पर धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

इस प्रसंग पर शिक्षापत्री भाष्य का पंचान्ह पारायण ता. ३१-१-१४ से ता. ४-२-१४ तक शा. स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी के वक्तापद पर हुई थी जिस के यजमान श्री कांताबहन धनजीभाई हिराणी थी। वसंत पंचमी को प्रातः ६-३० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से श्रीराधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का अभिषेक किया गया था। बाद में हरियाग की पूर्णाहुति तथा

अन्नकूट की आरती की गयी थी। बहनों को दर्शन आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवाला पधारी थी।

स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी होल में अमदावाद, भुज, जेतलपुर मूली के संतोने अपने हृदय के उद्‌गार व्यक्ति किये थे। अन्त में प.पू. आचार्य महाराजश्री ने कहा कि देव को होकर सभी को रहना चाहिये, इसी में सभी का कल्याण है। इसके बाद वसंत पंचमी का रंगोत्सव धूमधाम से मनाया गया था। जिस में किंसुक के पुष्प राग को सभी के ऊपर फेंक कर तरबोर कर दिया गया था। सम्पूर्ण व्यवस्था कोठारी कृष्णवल्लभ स्वामी ने की थी।

(शैलेन्द्रसिंह झाला)

घनश्याम मंदिर में प्रथम पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मूली मंदिर के अ.नि. स्वा. हरिनारायणदासजी के संत मंडल की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर का प्रथम पाटोत्सव ता. २१-१-१४ को संपन्न हुआ था। इस उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगीजीवन पंचाह्न पारायण ता. १७-१-१४ से २१-१-१४ तक स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुई थी। पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे। उन्ही के हाथों ठाकुरजी का अभिषेक अन्नकूट की आरती तथा कता की पूर्णाहुति की गयी थी। बहनों के विशेष आग्रह पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी भी पधारी थी बहनों को आशीर्वाद देकर खूब आनंदित हुई थी।

पारायण प्रसंग में सभा संचालन शा. भक्तिविहारीदासजीने किया था। रात्रि में विद्वान संतो द्वारा व्याख्यान होता था। समग्र आयोजन को. स्वा. कृष्णवल्लभदासजीने किया था। उत्सव के प्रेरक शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी थे। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

लीलापुर (ता. हलवद) में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर लीलापुर मं मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव के उपलक्ष्य में ता. २६-१-१४ से १-२-१४ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन की कथा का आयोजन किया गया था। इस प्रसंग पर समस्त धर्मकुल पधारकर गाँव को दिव्य बना दिया था। ता. १-२-१४ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे, उन्ही के हाथों ठाकुरजीकी प्राण प्रतिष्ठा, हरियाग की पूर्णाहुति तथा कथा की पूर्णाहुति की गयी थी। महोत्सव के आयोजक स्वा. भक्तिहरिदासजी तथा स्वा. धर्मवल्लभदासजी थे। समस्त सभा को प.पू. आचार्य महाराजश्री हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। करीब २७५ जितने संत इस कार्यक्रम में पधारे हुये थे। बहनो को आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी। सभा संचालन भक्तिनंदन स्वामीने किया था। (प्रति अनिलभाई दूधरेजिया)

भक्तिनगर (हलवद) श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा अशनपुर (भक्तिनगर) गाँव में ता. २२-२-१४ को दूधपाक का उत्सव मनाया गता था।

इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे, उन्होंने अपने वरद् हाथों दूधपाक का उत्सव सम्पन्न किया था। समस्त गाँव को आशीर्वाद देकर प्रसन्न हुए थे। स्वा. श्यामसुंदरदासजी (मूली) स्वा. कृष्णवल्लभदासजी, भक्तिहरिदासजी, चराडवा महंत स्वामी इत्यादि संत पधारे थे। श्रीजीस्वरुप स्वामी का संत मंडल सेवा कार्य किया था। हरिभक्त उत्सव का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव कर रहे थे। भक्तों की सेवा सराहनीय थी। (प्रति अनिलभाई)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन में प.पू. बड़े महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण मंदिर न्युजर्सी में विहोकन में १५ फरवरी शनिवार को सायंकाल श्री नरनारायणदेव गादी के ६ठे (निवृत्त) बड़े आचार्य महाराजश्री, प.पू. बडी गादीवालाजी पू. बिन्दु राजा, पू. श्री सौम्यकुमार, पू. श्री सुव्रतकुमार पधारे थे। इस प्रसंग में अपने आई.एस.एस.ओ. चेप्टरों में से संत हरिभक्त पधारे थे। प.पू. बड़े महाराजश्रीने मंदिर में विराजमान ठाकुरजी की आरती किये थे। बाद में पू. बिन्दुराजा तथा सौम्यकुमार एवं सुव्रतकुमार के ११ वें जन्म दिन का उत्सव मनाया गया था।

इस प्रसंग पर न्युजर्सी के मेयर पी. टर्नर तथा डे. मेयर पधार कर दोनो भाइयों को शुभेच्छा व्यक्त किये थे। ठाकुरजी को सुंदर अलंकारो से सजाया गया था। सुंदर केक बनाया गया था जिसे प.पू. बड़े महाराजश्री, सौम्यकुमार एवं सुव्रतकुमार एवं दोनो मेयर साथ मिलकर केक काटकर उत्सव को सम्पन्न किये थे। सभा में संतो ने तथा हरिभक्तों ने शुभेक्षा व्यक्त की थी।

अन्त में प.पू. बड़े महाराजश्रीने अपने भावात्मक आशीर्वाद दोनो नातियों को दिया था। दोनो को आगे प्रगति होने का आशीर्वाद दिये औरं यह भी कहे कि सत्संग में सदा ओतप्रोत रहें। सभी संत भक्त प्रसाद ग्रहण करके प्रस्थान किये थे।(प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो (इटास्का)

श्री नरनारायमदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत जे.पी. स्वामी तथा स्वा. विश्वविहारीदासजी की प्रेरणा से एवं भक्तों के सहयोग से यहाँ के मंदिर में शाकोत्सव तथा वसंत पंचमी को शिक्षापत्री का उत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

शाकोत्सव के दिन दोनो संतोने ठाकुरजी के समक्ष शाग को वधार कर तथा प्रसाद का भोग लगाकर एक दिव्य वातावरण बना दिया था। बाद में दोनो संतोने शाकोत्सव की महिमा को समझाया था।

वसंत पंचमी को शिक्षापत्री का उत्सव सभा में २१२ श्लोको के पठन के साथ मनाया गया था। समग्र आयोजन हरभक्तों के सहयोग से महंत सत्यप्रकाश स्वामी ने किया था। इस प्रसंग पर ठाकुरजी को शाग बघारते हुए दिखाया गया था। शाकोत्सव के यजमान श्री मुकेशभाई पटेल (वडुवाला) थे। अन्य हरिभक्त भी यजमान बने थे। राजेशबाई पटेल (डांगरवावाला) परिवार ने तथा अन्य भक्तों ने सुन्दर सेवा की थी

सभी प्रसाद ग्रहण करके अपने स्तान पर गये थे ।

(सत्यप्रकाश स्वामी)

कंटकी लुइज विले मां शाकोत्सव

श्री नरनारायणदेव स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद गादी के अन्तर्गत कंटकी लुइज विले में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी तथा हरिवंदन स्वामी की प्रेरणा से फरवरी मास के प्रारंभ में ठाकुरजी के समक्ष शाकोत्सव मनाया गया था । प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से मंदिर की प्रतिष्ठा संनिकट भविष्य में होगी । शाकोत्सव में अगल-बगल के शहरो से भक्त आये हुए थे । प्रमुखश्री विष्णुभाई तथा युवान हरिभक्तों की तथा महिला मंडल की सेवा सुंदर थी । अनेक भक्त यजमान बनने का लाभ लिये थे । शाकोत्सव का महत्व संतो ने समझाया था । सभी हरिभक्त कथा श्रवण करके तथा प्रसाद लेकर स्वस्थान प्रस्थान किये थे । (प्रवीण शाह)

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजली

अमदावाद : श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी के छोटे गुरुभाई को. पार्षद दिगंबर भगत गुरु स.गु. स्वा. बलदेवप्रसाददासजी (उम्र ६८ वर्ष) माधकृष्ण-४ ता. १८-२-१४ को श्रीहरि का स्मरण करते अक्षरनिवासी हुए है । करीब ५० वर्ष से अमदावाद में सेवा करते थे ।

मूली : श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली के वयोवृद्ध तपोवृद्ध ज्ञानवृद्ध स्वा. नरनारायणदासजी गुरु वैद्य स्वा. गोपलचरणदासजी (उम्र. १६ वर्ष) माधवद-३ ता. १७-२-१४ सोमवार को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये थे ।

अमदावाद : प.भ. गोविंदभाई रामाभाई पटेल की माताजी चंचलबहन रामाभाई पटेल (उ. १००) ता. ३-१-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है ।

अमदावाद : प.भ. घनश्यामभाई हरिलाल पटणी (उ. ७९ वर्ष) ता. ८-१-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

भाउपुरा : श्री नरनारायणदेव के अनन्य निष्ठावाले प.भ. त्रिभोवनभाई अमीचंदभाई पटेल ता. १५-१-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

अमदावाद : श्री नरनारायणदेव के अनन्य निष्ठावाले प.भ. परसोतमभाई मोहनभाई गाम्भा (मेथाणवाला) ता. २०-१-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

बीलीया (सिध्धपुर) : प.भ. पटेल दिवालीबहनअंबाराम सिद्धपुरा ता. २१-१-१४ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासीनी हुई है ।

सलाल (इडर कालुमाजा अमेरिका) : प.भ. कनुभाई तथा मुकेशभाई के पिताजी प.भ. प्रभुदास विठ्ठलदास पटेल ता. १-१-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

डांगरवा : प.भ. रामाजी बादरजी डाभी ता. १-१-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

माणेकपुर : प.भ. मणीबेहन जेठाभाई चौधरी ता. १६-१२-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

मोरबी : मूली श्री राधाकृष्णदेव के निष्ठावान श्री मुकेशभाई तथा प्रकाशभाई जोबनपुत्रा के पिता श्री प.भ. नानालाल जोबनपुत्रा ता. १२-२-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

बापुपुरा : प.भ. चौधरी देवजीभाई मणीलाल (उ. ३५ वर्ष) श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

बांकानेर (मूली देश) : प.भ. हीरालाल शंगारामभाई जवेरी (घनश्याम महाराज के परम भक्त) ता. १९-२-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

गांधीनगर : प.भ. कपिलाबहन चंदुभाई सोलंकी ता. १७-१-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

माणसा : प.भ. पटेल रामाभाई त्रिकमदास (परीडा) ता. १७-१-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

धमासणा : श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सक्रिय सदस्य राजूभाई पटेल के पिताजी चमनभाई माथुरभाई पटेल ता. १८-२-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट के पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए आचार्य महाराजश्री (२) नाथद्वारा मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट दर्शन ।(३) छपैया जन्म स्थान मंदिर में मुख्यद्वार का खातपूजन करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(४) वणझर मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर शाकोत्सव करते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री ।(५) आनंदपुरा मंदिर में शाकोत्सव करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।(६) प.पू. आचार्य महाराजश्री के ४२ वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में बालवा में सत्संग सभा ।(७) मणिनगर (सोजा) गाँव में श्री नरनारायणदेव महोत्सव के निमित्त (प्रथम) सभा में उद्‌बोधन करते हुए संत ।(८) भावपुरा मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर सभा में लाभ लेते हुए हरिभक्त ।(९) बारेजा मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर सभा में लाभ लेते हुये हरिभक्त ।(१०) कलोल पंचवटी मंदिर में ४२ वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में बहनों द्वारा समूह महापूजा ।

Registered under RNI NO.-GUJHIN/2007/20220 “Permitted to post at Ahd PSO on 11th every month under postal Regd. No.GUJ.581/12-14 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2014

(१) श्री स्वामिनारायण म्युजियम के तीसरे वार्षिक दिन प्रसंग पर सभा में दर्शन देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री ।(२) कालुपुर मंदिर की सभा मंडप में प.पू. बड़े महाराजश्री के पवित्र सानिध्य में अ.नि. कोठारी पार्षद दिगम्बर भगत की गुणानुवाद सभा ।

प.पू. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. भावि आचार्य महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के सानिध्य में

प्रारंभ
ता. ८-५-१४

षष्ठम्
बाल सत्संग शिबिर

पूर्णाहुति
ता. ९-५-१४

फीस मात्र ५०-०० रुपये वय मर्यादा १२ से २० वर्ष

आयोजक स्थल : श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा, गांधीनगर (गुजरात)

प्रवेश पत्र के लिये : भद्रेश - ९७३७१७८३८५ ● राजुभाई ९८७९३६८५५५ ● योगेश ८६९०५५२६५८

www.swaminarayan.in

Jagadish Offset

Praful Kharsani